आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" सितम्बर 2026

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 32
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

चतुर्वेदी चन्द्रिका

वर्ष –28 । अंक–9 । भाद्रपद/आश्विन (क्वॉर) – स.2083 । सितम्बर 2026

आरती

जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥
एक दंत दयावंत, चार भुजा धारी।
माथे सिंदूर सोहे, मूस की सवारी॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥
पान चढ़े फल चढ़े, और चढ़े मेवा।
लड्डुअन का भोग लगे, संत करें सेवा॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥
अंधन को आंख देत, कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥
'सूर' श्याम शरण आए, सफल कीजे सेवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

* हमारे राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम के 150 वर्ष पूर्ण होने पर विक्टोरिया मेमोरियल, कोलकाता में भव्य समारोह आयोजित किया गया।भारतवासियों के लिए गौरवशाली क्षण वन्दे मातरम् के सभी छह पदों का हिंदी में अर्थ/अनुवाद दिया गया है:

पहला पद

- वन्दे मातरम्।
- सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
- शस्यश्यामलां मातरम्।
- वन्दे मातरम्॥

हिंदी अनुवाद: माँ, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ! तुम स्वच्छ और शीतल जल से परिपूर्ण हो, सुस्वादु फलों से भरी हुई हो, दक्षिण की मलय पर्वत की सुगंधित हवाओं से शीतल हो, और लहलहाती हरी-भरी फसलों से सुशोभित हो।
हे माँ! मैं तुम्हें नमन करता हूँ।

तीसरा पद

- कोटि-कोटि-कण्ठ-कल-कल-निनाद-कराले
- कोटि-कोटि-भुजैर्धृत-खरकरवाले,
- अबला केन मा एत बले।
- बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्
- रिपुदलवारिणीं मातरम्॥
- वन्दे मातरम्॥

हिंदी अनुवाद: करोड़ों कंठों की भीषण जय-ध्वनि जिसके साथ गूंजती हो, करोड़ों भुजाओं में जिसने चमचमाती तीखी तलवारें थाम रखी हों, इतनी शक्ति होते हुए भी, हे माँ, तुम्हें कोई अबला (कमज़ोर) कैसे कह सकता है? अपार शक्तियों को धारण करने वाली, संकटों से उबारने वाली (तारिणी), और शत्रुओं की सेना का संहार करने वाली हे माँ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

पाँचवाँ पद

- त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
- कमला कमलदलविहारिणी,
- वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्,
- नमामि कमलां अमलां अतुलाम्
- सुजलां सुफलां मातरम्॥
- वन्दे मातरम्॥

हिंदी अनुवाद: दस भुजाओं में अस्त्र-शस्त्र धारण करने वाली देवी दुर्गा तुम ही हो, कमल के फूलों पर विराजने वाली माँ लक्ष्मी (कमला) तुम ही हो, विद्या और ज्ञान देने वाली माँ सरस्वती (वाणी) भी तुम ही हो। मैं तुम्हें नमन करता हूँ, उस निष्कलंक, अनुपम, पावन, तथा उत्तम जल और फलों से परिपूर्ण माँ को मेरा प्रणाम।

दूसरा पद

- शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्
- फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीम्
- सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
- सुखदां वरदां मातरम्॥
- वन्दे मातरम्॥

हिंदी अनुवाद: तुम्हारी रातें उज्ज्वल और मनमोहक चाँदनी से खिली रहती हैं, तुम खिले हुए फूलों और घने वृक्षों से सजी हुई हो, सदैव मधुर मुस्कान वाली और मीठी वाणी बोलने वाली हो, सुख प्रदान करने वाली और वरदान देने वाली हे माँ!
मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

चौथा पद

- तुमि विद्या, तुमि धर्म,
- तुमि हृदि, तुमि मर्म,
- त्वं हि प्राणाः शरीरे।
- बाहुते तुमि मा शक्ति,
- हृदयाते तुमि मा भक्ति,
- तोमारई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे॥
- वन्दे मातरम्॥

हिंदी अनुवाद: तुम ही हमारा ज्ञान हो, तुम ही हमारा धर्म हो, तुम ही हमारा हृदय हो और तुम ही हमारी अंतरात्मा हो, हमारे शरीर में प्रवाहित होने वाले प्राण भी तुम ही हो। हमारी भुजाओं की शक्ति तुम हो, हमारे हृदय की भक्ति तुम हो, हर मंदिर-देवालय में स्थापित होने वाली प्रतिमा केवल तुम्हारी ही है।
हे माँ! मैं तुम्हें नमन करता हूँ।

छठा पद

- श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्
- धरणीं भरणीं मातरम्॥
- वन्दे मातरम्॥

हिंदी अनुवाद: सांवली छटा वाली, सरल, सदा मुस्कुराने वाली और सुंदर आभूषणों से सजी, हम सबका पालन-पोषण करने वाली और धारण करने वाली हे धरती माँ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।
वन्दे मातरम्!

चतुर्वेदी चंद्रिका

अपनों से अपनी बात	5
संपादकीय	6
रक्षाबन्धन : होलीपुरा की सनूनो	7
दीवारों के आंखें होती है	9
सच्चे संस्कारों का दीपक	10
एहसास	11
बांगरू-बाण	12
शिक्षा एवं परीक्षा प्रणाली में सुधार एवं जेन जी का	14
घर एवं लॉकर के इंश्योरेंस: आवश्यकता एवं प्रक्रिया	15
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	16
समय की ट्रेन : रेलवे स्टेशन...	17
हरितालिका व्रत: इतिहास, महत्व	21
मुंबई का गणेशोत्सव	22
समाज में घटती संवेदनशीलता	23
व्यवसाय और उद्योग	24
शाखा समाचार	27
समाज समाचार	29
बिछड़े स्वजन	30

अंक 9
सितम्बर 2026, वर्ष - 28

सभापति
श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री शशांक चतुर्वेदी
मोबा. 9826086879

कोषाध्यक्ष
श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 9312242661

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. विनीता चौबे, भोपाल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक
दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', BM57, नेहरू नगर
करूणाधाम आश्रम के सामने, भोपाल
मोबा. 8707894349
ई- मेल :
sampadak2024.chandrika@gmail.com

उपसंपादक
लोकेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, गाजियाबाद

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :
Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED
BHIM UPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : शशांक चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक : **दिलीप सिकन्दरपुरिया**
वितरण प्रभारी : विश्वास चतुर्वेदी - 8160686094

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी समिति 2024–2027

संरक्षक:- डा० सतीश जी(नागपुर), श्री भरत जी (पूर्व सभापति) भोपाल,श्री आर.आर.जी (पूर्व सभापति) मुम्बई, श्री कमलेश जी पाण्डे(पूर्व सभापति) नोएडा, डॉ. प्रदीप जी (पूर्व सभापति) दिल्ली, ले. जन. विष्णुकांत जी(नोएडा), श्री विकास जी (कानपुर), श्री संतोष जी चौबे (भोपाल), श्री देवेन्द्र जी चौबे (गोंदिया), श्री महेश जी (दिल्ली)।

परामर्शदाता मण्डल:- श्री अविनाश जी (कानपुर), डॉ. ऋषभ जी (देहरादून), श्री उपेन्द्र जी पाण्डे (कोलकाता),श्री भरत कुमार जी (रिषड़ा),श्री शिव जी (कोटा), श्रीमती बीना जी मिश्रा (मैनपुरी/आगरा), डॉ. निखिल जी (आगरा), दिलीप जी, (फिरोजाबाद).

सभापति:- श्रीमती ऊषा जी भोपाल

उप-सभापति:- श्री मुनीन्द्र नाथ जी (नोयडा), श्री पंकज जी (मुम्बई), श्रीमती आभा जी (नागपुर), डॉ. कुश जी (इटावा), श्री विनोद जी (गुरूग्राम), श्री सुमंत जी (आगरा), श्री अंशुमान जी (जयपुर)

सचिव:- श्री शशांक जी (भोपाल)

सह-सचिव:- श्री आशुतोष जी (कानपुर), श्री करूणेश जी (ग्वालियर), श्री गोविन्द जी (जयपुर), श्री अभयराज जी (गुरूग्राम), श्री मनीष जी (कोटा), श्रीमती बबीता जी (लखनऊ), श्री संजय जी (अहमदाबाद)

कोषाध्यक्ष:- श्री ज्ञानेन्द्र जी (साहिबाबाद)

सम्पादक:- श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), उप सम्पादक:- श्री लोकेन्द्र जी(गाजियाबाद)

मा. कार्यकारिणी सदस्य गण:- श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), डा० राकेश जी (मथुरा),श्री मनीष जी (हरदोई), श्री लोकेन्द्र जी (गाजियाबाद), श्री भुवनेश कुमार जी चौबे (गोंदिया), श्री अजय जी चौबे (भोपाल), श्री राकेश कुमार जी 'चुनचुन' (बरेली), श्री विशाल जी (आगरा), श्री राहुल जी (मैनपुरी) श्री प्रदीप जी 'संजू' (गाजियाबाद), श्री राजीव जी (अहमदाबाद), श्री विवेक जी (मुम्बई),श्री विपिन जी (लखनऊ), श्री मनीष जी (दिल्ली), श्री ललित जी (लखनऊ), श्रीमती विनीता जी (देहरादून), श्री कृष्ण बल्लभ जी (बिलासपुर), श्री संजय जी मिश्रा (कानपुर), श्री अभिषेक जी (ग्वालियर), श्री आशीष जी 'रानू' (आगरा), श्री प्रवेश जी (कानपुर), श्री हर्षमोहन जी (आगरा), श्री आलोक जी (कोटा), श्री सतेन्द्र जी (नोयडा), श्रीमती चित्रा जी (भोपाल), श्री नवीन जी (जहांगीरपुर/लखनऊ), श्री सौरभ जी (लखनऊ), श्रीमती अंजू जी (मुम्बई), श्रीमती इंदु जी (नोयडा), श्री नवीन जी (चेन्नई), श्री हितेष जी (पुरा), श्री तनुज जी चौबे (नागपुर), श्री अरूण जी (जयपुर), श्री हर्ष कमल जी (बनारस), श्रीमती अलका जी (करनाल), श्री विमल जी (नोयडा), श्री मनोज जी (सागर), श्रीमती क्षमा जी (ग्वालियर), श्री प्रवेश जी (चांपा,छ०ग०), श्रीमती मीता जी (कानपुर), श्री अनुराग जी 'बब्बल' (आगरा), श्री मधुपम जी (मुम्बई), श्री धनेश जी (साहिबाबाद), डॉ. मीनाक्ष जी (भोपाल), श्री मुकेश गिरीश जी पाण्डे (कोलकाता), श्री गगन जी (पुरा), श्रीमती शिवांगी जी, भोपाल, श्रीमती अनुपमा जी, नोएडा

स्थाई आमंत्रित:- श्री मनोज जी (बैंगलोर) , श्री पदम जी (लखनऊ), श्री अशोक जी (फरीदाबाद), श्री गिरधारी जी (जयपुर), श्री कमलेश जी रावत (कोटा), श्री विपिन जी पाण्डे (गाजियाबाद), श्री राजेन्द्रनाथ जी (प्रयागराज), डॉ. अपूर्व जी (फिरोजाबाद), डॉ. कपिल जी (आगरा), श्री अनिल जी (भोपाल), श्री अरविंद जी (दिल्ली) , श्री दिनकर राव जी (फरौली), श्री योगेन्द्रनाथ जी (ग्वालियर), अतुल जी (फिरोजाबाद).

विशेष आमंत्रित:- श्री मधुकर जी पाठक (आगरा), श्री नीरज जी (चक्रधरपुर), श्री कौशल जी (दिल्ली), श्री अम्बर जी पाण्डे (भोपाल), श्री साकेत जी (मैनपुरी), श्री दीपक जी (लखनऊ), श्रीमती तृप्ति जी (पटना), श्री अंकुर जी (कटनी), श्री शैलेन्द्र जी (उचाड़), श्री अनुराग जी 'टिंचू' (कानपुर), श्रीमती शिखा जी पाठक (थाणे), श्रीमती अमिता जी (लखनऊ), श्री ललित जी (जयपुर/नोयडा), श्री श्यामलाल जी (भिण्ड), श्री आलोक जी (जयपुर), श्री संजय जी (लखनऊ),श्रीमती मधु जी (देहरादून), श्री धर्मेन्द्र जी (कानपुर), श्री मनीष जी (इटावा), श्री पीयूष जी (पूना), श्री जितेंद्र जी (पूना), श्री मधुर जी (बैंगलोर), श्री यदुवेश जी (पुरा/लखनऊ), श्री नवीन जी (बैंगलोर), श्री दिलीप जी (हरिद्वार), श्री शैलेन्द्र जी (फिरोजाबाद), श्री प्रवीण जी (हैदराबाद), श्री नीलकमल जी (कलकत्ता), श्री मुकेश जी (तरसोखर/रिसड़ा), श्री शैलेन्द्र जी (फरीदाबाद), श्री नरेश जी (भोपाल), श्री विश्वास जी (भोपाल), श्रीमती वंदना जी (रिसड़ा), श्री प्रशांत जी (मथुरा), श्री नरेन्द्र कुमार जी चौबे (ग्वालियर), श्री भूषण जी (साहिबाबाद), श्री दुर्गेश जी (जयपुर), श्री अनुराग जी (गुरूग्राम), श्री विशाल जी (दानपुर) श्री प्रवीण जी 'छौना'(फरौली), श्री लोकेन्द्र (कानपुर), श्री नलिन जी, (नोएडा), श्री हरीश जी, (भोपाल), नमन जी, लखनऊ

मूल निवास प्रकोष्ठ:- श्री गगन जी (पुरा) संयोजक।

शाखा सभा प्रकोष्ठ:- 1) ले. जन. विष्णु कांत जी नोएडा, 2) श्री पंकज जी, मुंबई 3) श्री प्रदीप जी, लखनऊ 4) श्री अजय जी तिवारी, ग्वालियर 5)श्री सुनील जी, जयपुर 6) श्री विनय जी, कोटा 7) श्रीमती नीतिका जी, गुरुग्राम 9) श्री प्रदीप जी,गाजियाबाद 10) श्री सुशील जी, फरीदाबाद 12) श्री मुकेश जी,आगरा (रजि.) 13) श्री संजय जी, अहमदाबाद 14)श्री पंकज जी, हरदोई, 15) श्री भूपेन्द्र जी, जहांगीरपुर सभा 16) श्री गौरी शंकर जी,समाज,फरौली 17) श्री महेश जी, देहली सभा 18) श्री शैलेंद्र जी, मथुरा सभा 19) श्री ऋषभ जी, देहरादून 20) श्री राजेन्द्र जी, फर्रुखाबाद सभा, 21) श्री एम. बाबू, मैनपुरी सभा, 22) श्री समीर चतुर्वेदी, पटना सभा, 23) नागपुर सभा, 24) दिलीप चतुर्वेदी, हरिद्वार सभा 24) नृपेंद्र जी, फिरोजाबाद, 25) श्रीमती नीलम पाठक जी, भोपाल सभा

युवा प्रकोष्ठ:- (1) श्री मधुपम जी- मुम्बई (संयोजक) (2) श्री नमन जी (फिरोजाबाद), उपसंयोजक

प्रवासी भारतीय प्रकोष्ठ:- (1) श्री विवेक जी-संयोजक (मम्बई)

सांस्कृतिक प्रकोष्ठ : अरविंद चतुर्वेदी दिल्ली संयोजक, संजय चतुर्वेदी फरीदाबाद

चिकित्सा प्रकोष्ठ:- (3) डॉ. मीनाक्ष जी-संयोजक (भोपाल)

उद्यमिता प्रकोष्ठ:- अजय चौबे, भोपाल

महिला प्रकोष्ठ:- श्रीमती शिवांगी जी (संयोजक), श्रीमती अनुपमा जी (उप संयोजक)

महासभा कार्यालय: 405/406, चिरंजीव टावर नेहरू प्लेस, नई दिल्ली 110019

।। अपनों से अपनी बात।।

● ऊषा चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

शब्द भी क्या चीज है?
महके तो लगाव।
बहके तो घाव।।
आदरणीय बन्धुवर/भगिनी।।
सादर पालागन
।कृष्ण जन्माष्टमी एवं गणेश चतुर्थी की शुभकामनाएं।

आशा है आप सभी परिवारसहित खुश एवं स्वस्थ्य होगें। आजादी का भी पर्व स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन उत्साह और उल्लास के साथ मनाया होगा एवं आनंद की अनुभूति का एहसास संदीजगी से किया होगा।

हरियाली तीज के रंगारंग कार्यक्रम बहनों द्वारा मनाए जाने के समाचार लगातार प्राप्त हो रहे हैं। एनसीआर महिला प्रकोष्ठ द्वारा, आगरा में दो स्थानों पर, जयपुर, लखनऊ एवं ग्वालियर ,मैनपुरी में भी सुंदर कार्यक्रम का आयोजन हुआ। भागीदारी करने वाली सभी बहने एवं संयोजकों को ढेर सारी शुभकामनाएं एवं बधाई।

श्रीमती बीना चतुर्वेदी जयपुर जो एक प्रसिद्ध साहित्यकार हैं उनके द्वारा

"वर विवाह संस्कार एवं गीत, कन्या विवाह संस्कार एवं गीत दो पुस्तक लिखी गई है, जिसको उन्होंने समाज समर्पित किया है। निश्चित ही यह दोनों पुस्तक वर्तमान समय में जब समाज रीतियां एवं संस्कार गीतों का ज्ञान नगण्य रह गया है ,अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी। लेखिका को शुभकामनाएं एवं बधाई। इसके पूर्व भी आपके द्वारा हमारे समाज के गीतों के दो पुस्तक लिखी गई हैं। पिछले माह मै फरीदाबाद, लखनऊ एवं कानपुर के प्रवास के समय बांधवो की भावनाओं से अवगत हुई निश्चित ही उनके बहुमूल्य सुझाव है,जिनके ऊपर महासभा द्वारा निश्चय विचार विमर्श किया जाएगा एवं क्रियान्वयन करने का प्रयास होगा। महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक की सूचना पिछले माह प्रदान की गई थी।

पुनः सूचित कर रही हूं दिनांक 18 अक्टूबर 26 को कोटा में बैठक आहूत की गई है। पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी के बंधावों को अपने पहुंचने की समय से सूचना कोटा शाखा सभा को आवश्यक रूप से दें। प्रयास करें 17 अक्टूबर को पहुंचाने की ताकि वहां के स्थानीय बांधबो द्वारा आयोजित कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दे सकें। 18 अक्टूबर को जिन सदस्यों का व्रत हो इसकी जानकारी भी आवश्यक रूप से दें ताकि व्यवस्था करने वालों को सहयोग प्राप्त हो। कार्यकारिणी सदस्यों का कर्तव्य है,अपने पहुंचने की सूचना आवश्यक रूप से देकर व्यवस्था में सहयोग करें। सदस्यता अभियान सुचारू रूप से संचालित हो रहा होगा सदस्यता के बारे में भी अपने कर्तव्य का निर्वहन करें, चतुर्वेदी चंद्रिका के लिए आपके आलेख कविताएं एवं अन्य उपयोगी सामग्री विज्ञापन आमंत्रित है। चंद्रिका में विज्ञापन देकर महासभा को आर्थिक रूप से सुदृढ करने में सहयोग प्रदान करें । इसी बीच हमारे समाज की बहुत सी विभूतियां परिवारों से बिछड़ कर आकाश में लीन हो गई। ईश्वर से प्रार्थना है उन सब पवित्र आत्माओं को अपने श्री चरणों में स्थान एवं परिवार जनों को धैर्य प्रदान करें ताकि इस गहन दुख संयम रख सके। आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर पालागन सहित

दिलीप सिकंदरपुरिया

संपादकीय

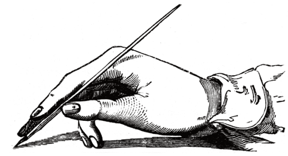

आदरणीय बंधुवर सादर पालागन एवं हार्दिक अभिनंदन।

विगत 27 जुलाई 26 को महासभा सभापति श्रीमती उषा जी के लखनऊ आगमन पर समागम हुआ, जिसमें सामाजिक विषयों पर गंभीर चिंतन एवं चर्चा हुई।

सामाजिक सहभागिता हेतु सदस्यता अभियान बढ़ाने के साथ ही अन्नपूर्णा योजना तथा विशेष सहायता निधि मजबूत बनाने के प्रयास करने पर आम सहमति जताई गई। कुछ सदस्यों ने महासभा की उपयोगिता पर प्रश्न चिन्ह उठाया। किसी ने कहा सामाजिक संगठन किसी भी समाज की शक्ति, स्थिरता और विकास का आधार होता है। जब समाज के विभिन्न वर्ग, संस्थाएँ और व्यक्ति एक संगठित रूप में कार्य करते हैं, तब सामूहिक प्रगति संभव होती है। आधुनिक परिवेश में व्यक्ति का अकेलापन एवं विभिन्न तनाव सबसे बड़ा रोग बन गया है। डाक्टर एवं परामर्श देने वाले इसके लिए सामाजिक सहभागिता एवं सहयोग बढ़ाने की ही सलाह देते हैं। सामाजिक संगठन इसका आधार बन सकते हैं,इसकी व्यापकता बढ़ाने के लिए आर्थिक सहयोग, सामाजिक समरसता तथा मर्यादित और जागरूक युवा वर्ग की सक्रिय सहभागिता अत्यंत आवश्यक है।

आर्थिक सहयोग केवल धन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संसाधनों, समय और कौशल के रूप में भी हो सकता है। जब लोग अपनी क्षमता के अनुसार योगदान देते हैं, तब संगठन आत्मनिर्भर बनता है और उसका विस्तार संभव होता है।

यदि सभी के बीच आपसी प्रेम, सम्मान और सहयोग की भावना बनी रहे, तो संगठन मजबूत बनता है,जो अकेलापन एवं तनाव को दूर करने में सफल हो सकता है। इसलिए आवश्यक है कि समाज में समानता, भाईचारा और सहिष्णुता को बढ़ावा दिया जाए। समरस समाज ही संगठित और सशक्त

युवा वर्ग का निर्माण करता है। युवा ही समाज की ऊर्जा और भविष्य होते हैं। यदि युवा वर्ग मर्यादित, अनुशासित और जागरूक होकर सामाजिक कार्यों में भाग ले, तो संगठन को नई दिशा और गति मिलती है। यदि उन्हें सही मार्गदर्शन और अवसर मिले, तो वे समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। साथ ही, युवाओं में नैतिक मूल्यों, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास भी आवश्यक है, ताकि वे केवल व्यक्तिगत सफलता ही नहीं, बल्कि सामूहिक कल्याण को भी प्राथमिकता दें।

जब संगठन के कार्यों में ईमानदारी और स्पष्टता होती है, तब लोगों का विश्वास बढ़ता है और वे अधिक उत्साह से जुड़ते हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि सामाजिक संगठन की मजबूती और विस्तार के लिए आर्थिक सहयोग, सामाजिक समरसता और युवा वर्ग की मर्यादित सहभागिता अनिवार्य है। जब ये तीनों तत्व संतुलित रूप में कार्य करते हैं, तब समाज में एकता, विकास और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है।

जन्माष्टमी, शिक्षक दिवस,हरितालिका तीज एवं गणेश जन्मोत्सव पर हार्दिक शुभकामनाएं।

रक्षाबन्धन : होलीपुरा की सनूनो

- **कृष्णाकान्त चतुर्वेदी**, लखनऊ

सर्वप्रथम आप सभी को रक्षा बंधन की हार्दिक शुभकामनाएं व बधाई। कोई भी त्यौहार आते ही अपने गाँव की याद आ ही जाती है और फिर शुरू हो जाती है पिछली यादें और विताये हुये वो सुंदर पल जिन्हें हम कभी नही भूल पाते। आज की नई पीढी को तो एक कहानी ही लगती है और विश्वास ही नही होता इन बातों का, और जाने भी कैसे, न कहीं सुना न देखा क्योंकि दादी-बाबा के पास रहते नही, मामी-पापा को आता नही और न उनको इतनी फुर्सत है कि अपने बच्चों को समय दे पाए और कम से कम अपने संस्कार के बारे में बतलाये। बस इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुये मेरा ये एक छोटा सा प्रयास है।

इस त्यौहार को होलीपुरा में पहिले सनूनो कहा जाता था। बाद में राखी और अब रक्षबंधन हो गया है। होलीपुरा में प्रत्येक त्यौहार को मनाने का एक अलग ही ढंग होता था। सबसे ख़ास बात यह थी कि पूरा गाँव एक परिवार के रूप में एक जुट होकर मनाता था। यही एक अलग विशेषता थी। और सुबह से पूरे दिन अलग अलग कार्यक्रम होते रहते थे और सभी उसमें भागीदार होते थे। बहुत ही आनन्द आता था।

हमारे यहाँ एक जगह है जिसको गौशाला के नाम से हम सब कहते है। ये केवल नाम की वजह नही है, यहाँ पर एक बहुत बड़ी गौशाला थी। जिसमें एक समय 100 से ऊपर गायें रहती थी। इन सब की देखभाल के लिए अलग लोग रहते थे, वो इनकी सभी तरह से देखभाल करते थे और उन दिनों सबका खर्चा बड़े घर वाले किया करते थे। कुछ दूध बेचकर भी आता था। किसी बात की कोई कमी नही थी। जिनके घर में गायें होती थी वो भी अपनी गायों को बहुत सजाते थे। उनके सींग व पूरे शरीर पर तरह तरह के रंग लगाया जाता था। एक अलग ही आनंद व उत्साह था।

सुबह से तैयारी होती थी। साफ़ सफाई के अलावा इन रंगी हुई गौऊ माता के पूजन की और उनको पूरे गाँव के प्रत्येक घर में गायों को घुमाया जाता था और उनकी पूजा होती थी, खिलाया जाता था और फिर दक्षिणा दी जाती थी। जब गायें अपने छोटे छोटे बछड़ों के साथ घूमती थी तो बहुत शंख नगाड़े, घन्टा झालर आदि बजाते हुए निकलते थे। एक मधुर आवाज ह्रदय को मोहने वाली होती थी। जिसका कुछ और ही आनंद आता था। दूर से ही मालुम हो जाता था कि गायें आने वाली हैं। उन सबके साथ ये सब को बजाते हुए चलने का आनंद व अनुभव कुछ और ही था जो व्यक्त करना सम्भव नही है।

अपने अपने दरवाजे पर घर के बड़े पुरुष थाली को लिए खड़े रहते थे। बस कल्पना करें। जब 100 से अधिक गायें अपने बछड़ों के साथ गाँव की प्रत्येक गली व मोहल्ले में घूमती होगी, तो कितना अद्भुत दृश्य होता होगा। क्या एकता थी, क्या निष्ठा, क्या एकता व अनुशासन था। जैसे ही गाय आती थी उनके माथे पर तिलक

लगाकर, खाना खिला कर, दक्षिणा देकर पैर छूकर गौऊ माता को विदा किया जाता था। कोई कोई तो उनके शरीर पर चादर डाल कर विदा करते थे। बस आज उस दृश्य की हम केवल कल्पना ही कर आनंद विभोर हो सकते है।

शायद बहुत कम लोगों को ही मालुम होगा कि हमारे स्वामी जी परम पूज्य श्री हरिहरानंद जी सर्वप्रथम गौशाला पर ही एक गुफ़ा बना के रहते थे। केवल एक बार भिक्षा के लिए एक ही घर जाते थे और वो घर अपने को बहुत सौभाग्यशाली मानता था। स्वामी जी की कृपा होलीपुरा पर अनंत वर्ष थी और आज भी बरस रही है। उनका एक स्थान भी बना हुआ था। जिसको पुराने लोग अभी भी देखने और पूजन के लिय जाते है। बाद में जो आजकल गुफ़ा के नाम से जानी जाती है, बहां रहने लगे। ये स्थान स्वामी जी ने स्वयं ही पसन्द किया था, क्योंकि ये एक तो जमुना जी के रास्ते में था जो वो रोज स्नान करने जाया करते थे, और उन्हें इस स्थान में कुछ अलग विशेषता लगी। नीचे कि जो कच्ची गुफा है ये आपके निजी हाथों से बनाई हुई है। जो भी जमुना जी नहाने जाता थे वे लोटते समय स्वामी जी दर्शन और आशीष को अवश्य जाते थे। आज ये हम लोगों का एक भव्य और तीर्थ स्थान है। ये सब उन्हीं की कृपा का फल है।

रक्षाबंधन केवल एक धागों का ही त्यौहार नही है, यह एक प्रेम का, रक्षा का व आश्वासन का प्रतीक व त्यौहार है, सर्वप्रथम यह माता लक्ष्मी जी ने प्रारम्भ किया था, जब वो श्री विष्णु जी को राजा वलि से राखी बाँध कर उनसे अपनी रक्षा का वचन उपहार में माँग कर ले के आई थी। यह कथा सभी को ज्ञात है अतः इसे संक्षेप में ही कहूँगा। जब भगवान ने वावन अवतार लेकर राजा बलि से तीन पग भूमि मांगी थी और केवल दो पग में ही सम्पूर्ण पृथ्वी, आकाश नाप लिया था और तीसरे पग के लिए कुछ था ही नही तो राजा बलि ने तीसरा पग अपने शिर पर रखने को कहा। तब भगवान विष्णु प्रकट हो गये और बहुत प्रसन्न हुए और वर मांगने के लिए कहाI राजा बलि ने उन्हें अपना द्वारपाल बनने का निवेदन किया। भगवान ने इसे स्वीकार कर लिया। भक्तों के बस में है भगवान। इधर माता लक्ष्मी जी परेशान रहने लगी तब नारद जी ने ये सुझाव दिया कि आप राजा बलि को अपना भाई बना कर राखी बान्ध कर आओ और उपहार में अपनी रक्षा का आश्वासन लेकर भगवान को माँग लेना। बस तभी से ये भाई बहन की परम्परा चली आ रही है। बहन राखी बांधने भाई के घर जाती है, तिलक करती है, उसके भाल पर जो शक्ति का स्थान है, मिठाई खिलाती है, मधुर बोलने व व्यवहार के लिए, फिर राखी बांधती है। अपनी रक्षा का वचन लेती है। भाई उपहार स्वरूप उसे रक्षा का आश्वासन देता है। आज कल तो रूपये या अन्य कोई वस्तु अपनी बहन को उपहार स्वरूप देते है।

होलीपुरा में प्रथम राखी अपने घर में बैठे भगवान को बाँधी जाती है क्योंकि भगवान ही पूरे घर की रक्षा करते हैं और उनसे सभी की रक्षा के लिए प्रार्थना की जाती है। उनको घर बने हुए व्यंजनों का भोग लगाने की प्रथा है। गाँव में पहले पंडित जी श्री स्व. ब्रिज किशोर जी आते थे और वही घर के बड़ों को राखी बांधते थेI पंडितजी के पैर छू कर दक्षिणा दिया जाता था। कभी कभी छोटे बच्चे भी पहुँच जाते थे, उन्हें भी वे बड़े प्रेम से राखी बांधते थे और सिर पर हाथ रख कर आशीष देते थे। बाद में यही कार्य उनके शिष्य श्री मनी राम पंडित जी करने लगे। कही कही इसको अपने घर के पुरोहित से भी करवाने की भी प्रथा है। घर की औरतें तरह तरह के व्यंजन बनाने में व्यस्त रहती थी। मुख्य व्यंजन होता था सिमई की खीर और सूखी सिमई जो बूरा के साथ और उस पर एक चम्मच शुद्ध घी डाल कर बहुत ही स्वादिष्ट लगती थी। इसके अलावा पूड़ी, कचौड़ी, पूआ, गुलगुला आदि अलग से बनते थेI इन सबका स्वाद उस दिन कुछ अलग ही होता था।

दरबाजे पर बड़े पुरुष लोग एक बेला (कटोरा) में सक्के ले कर बैठते थे। सर्वप्रथम ब्रहामणों की टोली आती थी जो सबको राखी बांधती थी और उन सभी को एक एक पैसा दिया जाता था, इसके बाद अन्य जाति के लोग आते थे, सभी राखी बांधते थे और पैर छूकर अपनी रक्षा का आशीष व एक एक पैसे लेकर बड़ी प्रसन्नता से जाते थे।

गौशाला पर एक तालाब था उसके पास मेला लगता था। गाँव के हलवाई ही दुकान लगाते थे। मुख्य मिठाई कलाकंन्द और गुलाब जामुन, जलेबी होती थी और चाट में आलू की चाट व दहीबड़ा होता था, वो पत्ते पर खाने और बहुत देर तक पत्ते को चाटने का मजा ही कुछ अलग था। मेले के लिए इकन्नी (चार पैसे) मिलते थे उसी में सब खा लेते थे।

उसके बाद मेले का असली कार्यक्रम होता था कुड्डी कूद (long jump)। यह कार्यक्रम काफी देर तक चलता रहता था। देखने वालों की काफी भीड़ होती थी। एक प्रतियोगिता के रूप में होती थी, इसको देखने के लिए बड़े घर वाले भी आते थे, जो प्रथम होता था। उसे इनाम के रूप में पहिले 2,5 रूपये और बाद 11 रूपये तक देते जो हमको याद है। इसमें प्रमुख कूदने वालो में कुछ फरेरी के खोड, गुज्जा जिसमें से गैंदा (बहरा) था,एक जौहरी तांगा चलाने वाला भी था और होलीपुरा से बनिया और अपने चौबों में श्री सुरेन्द्रनाथ जो @सुरी दद्दा के नाम से जाने जाते थेI सुरेन्द्र दद्दा हमेशा प्रथम आते थे। जब तक वो होलीपुरा में रहे, ये पुरस्कार इन्ही को मिलता था।

बाद में सब चर्चायें करते हुए अपनी अपनी राखिया गिनते हुए और दिखाते हुए घर जाते थे। क्या दिन थे वो भी उनको कभी भी नही भुलाया जा सकता।

यह है ग्रामीण जीवन की सुनहरी यादें।

दीवारों के आंखें होती है

- **श्रीमती उषा चतुर्वेदी**, भोपाल

ईमान,ईमानदारी सनातन काल से प्राणी के सद्आचरण का महात्वपूर्ण हिस्सा है।सतयुग हो त्रेतायुग हो द्वापर हो और कलयुग सभी में ईमानदार, बेइमान थे और हैं।किसी में कम किसी में ज्यादा और कलयुग में ईमानदार वैसे ही ढूँढते पड़ते है जैसे कंकड़ से चावल बीनना। लोगों में एक धारणा बनी हुई है कोई कितना भी छिपाकर गलत काम करे मालूम पड़ जाता है,और इसी धारणा को मानने वाले जो कहते है वह मुहावरा बना गया।

दीवारों के कान होते हैं।

सदियों से सुनती आ रही थी। आखिर आज मुझे संकेत देने ही पड़े। दीवारों के सिर्फ कान ही नहीं, आंखें भी होती। आप क्या ? मानने को तैयार नही है। हाथ कंगन को आरसी क्या,पढ़े लिखे को फारसी क्या .. मैं बता देती हूँ आज क्या हुआ? मैं कमरे की दीवार हूँ चौबीस घंटे रहती हूँ। यदि देखा जाय तो सबसे ज्यादा मेरा ईमानदारी का कार्य है।लेना न देना बस अपने कार्य में लगे रहना । कही आना जाना भी नही, कहाँ मुँह खोलोगी, यही कारण लोग बिना संकोच डरे बिना अपना ईमान बेचते है और खरीददार खरीदते है। जो शातिर है खेले खाये है वो पर्दा डालते हैं ,वैसे आप जग जाहिर मत करना, आप यदि किसी अन्य को जानकारी नही देगों तो दस्तूर कर दूँगी।यदि जानकारी हो गयी कि मैं देंखने लगी हूँ, तो शायद मुझे कवर कर देगें। मैं तो वैज्ञानिकों को धन्यवाद देती जिन्होनें यह शक्ति मुझे प्रदान कर दी है। कभी-कभी मुझे अपने ऊपर ग्लानि भी होती है,भ्ष्टाचार खुल्लम खुल्ला,अन्याय,शोषण गरीब का पर कुछ कर नही सकती घुट्ती रहती हूँ। संवेदनशील होने के कारण आँसू पीती रही हूँ। आ गया क्लाइन्ट मैं चुपचाप बस देख रही तथा सुन रही हूँ।

'पारस ने कहा बड़े बाबू मेरा बिल अब तो पास हो गया होगा?

तुम बैठो देखता हूँ। बड़े बाबू ने बेरुखी से जवाब दिया।

अलमारी से पुरानी फाइलें निकलवायी थी।

बड़े बाबू ने कहा चपरासी बहुत देर फाइल ढूँढता रहा पर उसमें नही हैं। फाइल का पता लगाकर आया करो। बार-बार आकर समय खोटी करते हो। तुमने तो कितनी ईमानदारी से काम किया था। तुम्हें तो मालूम है, मैं कितना ईमानदार हूँ। फाइल होती तो अभी तक कर देता पारस हाथ जोडे खड़ा है, जैसे भीख माँग रहा है। आवाज भर्रायी हुयी थी। साब एक बार और तलाश लो। बडे बाबू बोले मैं ईमानदारी की कद्र करता हूं। बड़े साहब के पास गया था सब उनकी फाइल कर दो, बहुत ईमानदार हैं, मालूम है क्या कहने लगे। जिसको मौका नहीं मिलता वही ईमानदार

अरे बाबा जाओ दिमाग मत खाओ,मुझे और भी काम है।

वो इस पीड़ति जन की भीड़ में अंकेला नही था। सुबह से ना जाने कितने आये चले गये। कोई गाली बकता हुआ, कोई धमकता हुआ, कोई यह कहता हुआ पैसा देने के बाद भी काम नहीं किया बहुत बेईमान हो बाहर निकालो देखता हूं।

साब चाय लाऊँ चपरासी ने आकर पूछा?

रामखिलावन आज यह जेब पूरी तरह से खाली है।

साब बड़ा आसामी फाँसा है, लाखों के बारे न्यारे होंगे

बड़े बाबू के कमरे से निकलकर उस पारस का चेहरा उतर गया कैसे करेगा माँ का श्राद्ध? जब आता तब बड़े बाबू एक न एक फाइल में कमी निकाल देते फाइल वही की वही एक टेबिल से दूसरी टेबिल पर भी नहीं गई।

सिर्फ इतना ही बोला ठीक है, चल दिया ।

सोच कर फैसला किया पारस बड़बड़ाने लगा।

बड़े बाबू जैसी तुम्हारी मर्जी मगर मैं पैसा नहीं देने वाला।

ईमानदारी से कार्य किया है, सड़क की गुणवक्ता देरव कर

चीफ़ इंजीनियर प्रसन्न हुये थे।

घर की सारी पूँजी लगाकर ही वह सड़क पूरी कर पाया था। फाइल तिल भर भी नहीं खिसकी। चपरासी मुझे देख कर कह रहा था। फाइल पर वजन रख दो, घर बैठे बैठे रुपया आ जाएगा।

चपरासी ने कुटिल मुस्कान के साथ कहा।

तभी बड़े बाबू की चहकती आवाज सुनी,

आइये खन्ना साब बहुत दिन बाद आये।

नया टेन्डर डाला है।

काहे की चिन्ता मैं हूँ न, आपकी सेवा के लिये दोनों हँस दिये। खन्ना साहब का हाथ जेब पर गया।

बड़े बाबू के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई।

आर्डर लेकर आ जाऊंगा।खाली जेब ठेकेदार ने कहा।

पारस स्मृतियों में खो गया। नगर निगम से जब पहला टेंडर पास हुआ बहुत खुश था। चलो अब ठेकेदारी जम जाएगी। घर की पूँजी तथा पत्नी के जेवर तक उसमें लगा दिये।

काम तो तुम्हारा बहुत बढ़िया है।

इंजीनियर ने सड़क का निरीक्षण करते हुए कहा।

आप पेमेंट जल्दी करा दीजिएगा। माँ बीमार है, इलाज कराना।

उसे याद आया माँ ने मरते दम उसका हाथ पकड़ कर कहा, काम ईमानदारी से करना। चलते-चलते ठोकर लगी और वह वापस वर्तमान में लौट आया।

घर पहुँचा और बड़ी फुर्ती से हाथ में कुदाली लेकर निकला। सड़क खोद डालूंगा जब पैसा नहीं तो सड़क क्यों?

यह है ईमानदारी, लोगों ने कहा दीवार ने देखने लगी।

सच्चे संस्कारों का दीपक

- **कनक चतुर्वेदी** कोलकाता

एक छोटे से गाँव में आरव नाम का एक बालक रहता था। वह बहुत चंचल और बुद्धिमान था, लेकिन कभी-कभी शरारत में वह सही और गलत का अंतर भूल जाता था। उसके माता-पिता और दादी उसे हमेशा अच्छे संस्कार सिखाने की कोशिश करते थे, परंतु आरव को लगता था कि ये सब बातें केवल किताबों में ही अच्छी लगती हैं, वास्तविक जीवन में नहीं।

आरव की दादी बहुत धार्मिक और अनुभवशील थीं। वे हर रात उसे एक कहानी सुनाती थीं जिसमें ईमानदारी, दया, और सम्मान का महत्व बताया जाता था। एक दिन दादी ने कहा, बेटा, जीवन में धन, विद्या और शक्ति सब कुछ मिल सकता है, लेकिन अगर संस्कार नहीं हैं, तो ये सब व्यर्थ है। आरव ने बात सुनी, लेकिन वह उसे गहराई से समझ नहीं पाया।

एक दिन की बात है, आरव स्कूल जा रहा था। रास्ते में उसे एक बूढ़ी अम्मा दिखाई दीं, जो सड़क पार करने की कोशिश कर रही थीं। आरव जल्दी में था, क्योंकि उसे स्कूल देर हो रही थी। उसने सोचा, अगर मैं रुक गया तो मुझे डांट पड़ेगी। और वह आगे बढ़ गया।

लेकिन कुछ कदम चलने के बाद उसे दादी की बात याद आई—दया और सेवा सबसे बड़ा धर्म है। उसका मन अंदर से कचोटने लगा। वह तुरंत वापस लौटा और अम्मा का हाथ पकड़कर उन्हें सड़क पार कराई। अम्मा की आँखों में आभार के आँसू थे। उन्होंने कहा, बेटा, भगवान तुम्हें हमेशा खुश रखे। यह सुनकर आरव के मन को एक अलग ही शांति और खुशी मिली।

उस दिन स्कूल में एक और घटना हुई। कक्षा में शिक्षक ने एक परीक्षा ली। आरव को एक प्रश्न का उत्तर नहीं आता था। उसके पास बैठा दोस्त धीरे से उत्तर बता रहा था। आरव के मन में द्वंद्व शुरू हो गया—अगर मैं नकल कर लूँ, तो अच्छे अंक आ जाएंगे, लेकिन यह गलत है। उसे फिर दादी की बात याद आई—ईमानदारी सबसे बड़ी पूंजी है।

आरव ने नकल नहीं की और खाली उत्तर छोड़ दिया। जब परीक्षा के परिणाम आए, तो उसे उस प्रश्न में शून्य अंक मिले। वह थोड़ा उदास हुआ, लेकिन शिक्षक ने पूरी कक्षा के सामने उसकी ईमानदारी की सराहना की और कहा, अंक तो बाद में भी सुधारे जा सकते हैं, लेकिन चरित्र एक बार गिर गया तो उठाना कठिन होता है। यह सुनकर आरव को गर्व महसूस हुआ।

धीरे-धीरे आरव के व्यवहार में बदलाव आने लगा। वह अपने माता-पिता का सम्मान करने लगा, छोटे बच्चों की मदद करता, और कभी झूठ नहीं बोलता। एक दिन उसके पिता ने देखा कि घर के बाहर एक गरीब बालक खड़ा है, जो भूखा लग रहा था। आरव ने बिना कहे उसे घर के अंदर बुलाया और खाना खिलाया। पिता ने मुस्कुराते हुए कहा, आज मुझे सच में गर्व है कि मेरा बेटा संस्कारित हो रहा है।

समय बीतता गया और आरव बड़ा होकर एक सफल व्यक्ति बना। लेकिन उसकी सबसे बड़ी पहचान उसकी सच्चाई, दया और विनम्रता थी। लोग उसे केवल उसके काम के लिए नहीं, बल्कि उसके अच्छे व्यवहार और संस्कारों के लिए भी सम्मान देते थे।

एक दिन गाँव में एक बड़ा समारोह हुआ, जिसमें आरव को मुख्य अतिथि के रूप में बुलाया गया। मंच पर उसने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा, अगर आज मैं कुछ भी हूँ, तो वह मेरे दादी के दिए हुए संस्कारों की वजह से हूँ। उन्होंने मुझे सिखाया कि जीवन में सबसे बड़ा धन अच्छा चरित्र है।

उसकी बातें सुनकर वहाँ उपस्थित सभी लोग भावुक हो गए। बच्चों के माता-पिता ने निश्चय किया कि वे भी अपने बच्चों को केवल पढ़ाई ही नहीं, बल्कि अच्छे संस्कार भी देंगे।

** अच्छे संस्कार ही जीवन की सच्ची पूंजी हैं।

एहसास

. **सुचित्रा दिलीप चतुर्वेद**, लखनऊ

श्री राम, लक्ष्मण एवम् सीता मैया चित्रकूट पर्वत की ओर जा रहे थे, राह बहुत पथरीली और कंटीली थी !

कि अचानक श्री राम के चरणों मे कांटा चुभ गया !

श्रीराम क्रोधित नहीं हुए, बल्कि हाथ जोड़कर धरती माता से अनुरोध करने लगे ! बोले– माँ, मेरी एक विनम्र प्रार्थना है आपसे, क्या आप स्वीकार करेंगी ?

धरती बोली– प्रभु प्रार्थना नहीं, आप आज्ञा दीजिए !

प्रभु बोले, माँ, मेरी बस यही विनती है कि जब भरत मेरी खोज मे इस पथ से गुज़रे, तो आप फूलों जैसी नरम हो जाना !

कुछ पल के लिए अपने आँचल के ये पत्थर और कांटे छुपा लेना ! मुझे कांटा चुभा सो चुभा, पर मेरे भरत के पाँव मे अघात मत करना श्री राम को यूँ परेशान देखकर धरा दंग रह गई !

पूछा– भगवन, धृष्टता क्षमा हो ! पर क्या भरत आपसे अधिक सुकुमार(कोमल) हैं ?

जब आप इतनी सहजता से सब सहन कर गए, तो क्या कुमार भरत सहन नहीं कर पाँएगें ?

...फिर उनको लेकर आपके चित मे ऐसी व्याकुलता क्यों ?

श्री राम बोले– नहीं... नहीं माते, आप मेरे कहने का अभिप्राय नही समझीं ! भरत को यदि कांटा चुभा, तो वह उसके पाँव को नही, उसके ह्रदय को विदीर्ण कर देगा ! ह्रदय विदीर्ण !! ऐसा क्यों प्रभु ?, धरती माँ जिज्ञासा भरे स्वर में बोलीं !!

अपनी पीड़ा से नहीं माँ, बल्कि यह सोचकर कि...इसी कंटीली राह से मेरे भैया राम गुज़रे होंगे और ये शूल उनके पगों मे भी चुभे होंगे ! मैया, मेरा भरत कल्पना मे भी मेरी पीड़ा सहन नहीं कर सकता... इसलिए उसकी उपस्थिति मे आप कमल पंखुड़ियों सी कोमल बन जाना..!!

अर्थात–

रिश्ते अंदरूनी एहसास, आत्मीय अनुभूति के दम पर ही टिकते हैं। जहाँ गहरी आत्मीयता नही, वो रिश्ता नही, केवल दिखावा हो सकता है ।

इसीलिए कहा गया है कि...

रिश्ते खून से नहीं, परिवार से नही,

मित्रता से नही, व्यवहार से भी नही,

बल्कि...

रिश्ते सिर्फ और सिर्फ आत्मीय एहसास से ही बनते और निर्वहन किए जाते हैं ।

...और जहाँ एहसास है, वहीं आत्मीयता है ..

जहां आत्मीयता है वहीं अपनापन है।

जेन जी का उदय

- भव्या चतुर्वेदी, कोलकाता

नई सदी की धड़कन में, एक नई कहानी है,जेन जी की सोच में, बदलाव की रवानी है।हाथों में मोबाइल, आँखों में उजियारा,ज्ञान के सागर में, इनका है बसेरा सारा। न किताबों तक सीमित, न दायरों में बंधे,डिजिटल दुनिया के संग, हर पल ये जुड़े।गूगल की गलियों में, उत्तर ये ढूंढते,हर जिज्ञासा को ये, खुद ही हैं बूझते। सपनों की उड़ान में, ये ऊँचा आसमान,ना रुकने की चाहत, ना थकने का अरमान।परंपरा को समझते, पर सवाल भी करते,हर रूढ़ि के आगे, ये नए रास्ते धरते। संवेदनाओं से भरे, दिल में है करुणा,प्रकृति के संग जीने की, इनकी है भावना।पर्यावरण की चिंता, इनके मन में बसती,धरती को बचाने की, लौ इनमें सुलगती। नारी–पुरुष समानता, इनके विचारों में,भेदभाव की दीवारें, नहीं इनके संसारों में।हर पहचान को ये, सम्मान देते हैं,विविधता के रंगों को, गर्व से लेते हैं।

कभी–कभी उलझन में, ये खुद को पाते,दबावों के साये में, अपने को आज़माते।पर गिरकर भी उठना, इनकी पहचान है,संघर्षों के बीच ही, इनका निर्माण है। रोज़गार की राहें, अब नई बनानी हैं,पुरानी सोचों को, अब पीछे हटानी हैं। स्टार्टअप की दुनिया में, ये कदम बढ़ाते,नवाचार के दीपक, हर ओर जलाते।

सच्चाई की खोज में, ये आगे बढ़ते,फेक न्यूज़ के जाल से, सच को हैं गढ़ते।आवाज़ उठाने में, ये पीछे नहीं रहते,अन्याय के विरुद्ध, ये खुलकर कहते। परिवार और समाज का, संतुलन बनाते,अपनों के साथ मिलकर, रिश्ते निभाते।स्वतंत्रता के संग ही, जिम्मेदारी समझते,जीवन के हर मोड़ पर, अनुभव से सीखते। जेन जी का ये युग, परिवर्तन का दौर,नई सोच की लहरें, हर दिशा में जोर।भविष्य की नींव ये, मजबूत बनाते,कल के उजाले को, आज में सजाते।

ये पीढ़ी है आशा की, नई किरणों वाली,हर अंधेरे में खोजे, रोशनी की लाली।जेन जी के हाथों में, आने वाला कल,इनकी मेहनत से ही, होगा उज्ज्वल पल।

बांगरू-बाण
श्रीपाद अवधूत की कलम से

- अवधूत चिंतन श्री गुरुदेव दत्त

गोत्र एवं प्रवर व्यवस्था का शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक विश्लेषण। सनातन हिंदू धर्म में 'गोत्र एवं प्रवर।' व्यवस्था केवल एक सामाजिक पहचान नहीं है, बल्कि यह प्राचीन ऋषियों द्वारा विकसित एक अत्यंत सूक्ष्म आनुवंशिक विज्ञान (Genetic Science) है। आधुनिक जीव विज्ञान के सिद्धांतों के साथ जब हम इसका मिलान करते हैं, तो पूर्वजों की दूरदर्शिता स्पष्ट दिखाई देती है। ऋषि-मुनियों ने बिना माइक्रोस्कोप या DNA टेस्ट के ऐसे नियम बनाए जो आज आनुवंशिकी से मेल खाते हैं। या दूसरे शब्दों में कहे तो ऐसा लगता है कि इन्हीं महान ऋषि मुनियों के इन ग्रंथों को जीव वैज्ञानिकों ने केवल कॉपी कर लिया है। 'गोत्र विज्ञान व प्रवर' आधुनिक 'मॉलिक्यूलर जेनेटिक्स' (Molecular Genetics) के बीच का संबंध अद्भुत है। जब हम इन दोनों का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि जिसे हम धर्म कहते थे, वह वास्तव में उच्च स्तरीय जीव विज्ञान था। गोत्र व्यवस्था को समझने के लिए 'प्रवर' को भी समझना अत्यंत अनिवार्य है, क्योंकि यह गोत्र के भीतर का 'सूक्ष्म फिल्टर' (Fine Filter) है। यदि गोत्र एक वृक्ष की जड़ है, तो प्रवर उसकी मुख्य शाखाएँ हैं।

गुणसूत्र (Chromosomes) और वंश का वाहक

आधुनिक विज्ञान के अनुसार, मनुष्य में 23 जोड़े गुणसूत्र होते हैं। इनमें से एक जोड़ा 'लिंग गुणसूत्र' (Sex Chromosomes) होता है। पुरुष में यह XY और स्त्री में XX होता है।

* **Y-गुणसूत्र की विशेषताः** गोत्र का मुख्य आधार Y-Chromosome है। प्रकृति का नियम है कि पुत्र को अपने पिता से 'Y' गुणसूत्र मिलता है, जबकि पुत्री को पिता से 'X' गुणसूत्र प्राप्त होता है।
* **अक्षय गुणसूत्रः** 'Y' गुणसूत्र कभी नहीं बदलता। यह पिता से पुत्र, फिर उसके पुत्र में पीढ़ी-दर-पीढ़ी लगभग अपरिवर्तित रूप में स्थानांतरित होता रहता है।
* **स्त्रियों में स्थितिः** स्त्रियों में 'Y' गुणसूत्र नहीं होता, इसलिए विवाह के पश्चात उनका गोत्र बदल जाता है क्योंकि वे अपने पति के वंश (Y-Chromosome की निरंतरता) का हिस्सा बनती हैं।

प्रवर (Pravara): गोत्र का बौद्धिक और आनुवंशिक परिचय 'प्रवर' शब्द का अर्थ है 'श्रेष्ठ' या 'वरिष्ठ'। गोत्र व्यवस्था जहाँ रक्त (Bloodline) की शुद्धता सुनिश्चित करती है, वहीं प्रवर बौद्धिक विरासत (Intellectual Legacy) और विशिष्ट आनुवंशिक गुणों (Specific Genetic Markers) की पहचान कराता है।

प्रवर का वैज्ञानिक महत्व

'जेनेटिक सब-ग्रुप्स'

आधुनिक जेनेटिक्स में एक 'हेप्लो-ग्रुप' के भीतर कई 'सब-क्लेट्स' (Sub-clades) होते हैं। प्रवर ठीक वही काम करता है।*

* एक ही गोत्र के दो व्यक्तियों के प्रवर अलग हो सकते हैं। इसका अर्थ है कि उनके पूर्वज तो एक ही मूल ऋषि थे, लेकिन समय के साथ उनके वंश की एक शाखा ने विशिष्ट ज्ञान या शारीरिक विशेषताओं को विकसित कर लिया।
* विवाह में नियमः शास्त्रों के अनुसार, केवल गोत्र अलग होना पर्याप्त नहीं है, प्रवर का भी अलग होना अनिवार्य माना जाता है। यदि दो लोगों का गोत्र अलग हो लेकिन प्रवर एक ही हो, तो विवाह वर्जित होता है। यह Inbreeding को रोकने का एक अत्यंत कठोर सुरक्षा चक्र है।

प्रवर का आध्यात्मिक आधार: ऋषि परंपरा

जैसे कि मेरा गोत्र 'भारद्वाज' है और प्रवर 'आंगिरस, बार्हस्पत्य, व भारद्वाज' है, तो मैं अपने मूल ऋषियों की सूची बता रहा हूं।

* ये वे ऋषि होते हैं जिन्होंने उस वंश के लिए ज्ञान, मंत्र और संस्कारों की स्थापना की।
* यह इस बात का प्रमाण है कि उस व्यक्ति के DNA में किन विशिष्ट ऋषियों का तप और बौद्धिक गुण संचित हैं।

प्राचीन ग्रंथों में प्रवर की व्याख्या

* **आश्वलायन श्रौत सूत्र:** इस ग्रंथ में प्रवर की विस्तृत सूचियाँ दी गई हैं और बताया गया है कि यज्ञ के समय अपने प्रवर का उच्चारण करना क्यों आवश्यक है।
* **मत्स्य पुराण:** यहाँ विभिन्न गोत्रों और उनके प्रवरों के बीच अंतर्संबंधों का वर्णन है, जो यह सुनिश्चित करता है कि कौन से कुल आपस में विवाह कर सकते हैं और कौन से नहीं।

प्रवर व्यवस्था का सामाजिक-वैज्ञानिक संदेश

प्रवर व्यवस्था यह संदेश देती है कि मनुष्य केवल अपने पिता के शरीर (Cell) का अंश नहीं है, बल्कि वह उन ऋषियों की 'मेधा' और 'ऊर्जा' का भी उत्तराधिकारी है। विवाह के समय प्रवर का मिलान यह सुनिश्चित करता है कि:

* **Biological Diversity:** जीन पूल में अधिकतम विविधता बनी रहे।
* **Intellectual Harmony:** दो भिन्न प्रकार की बौद्धिक ऊर्जाओं का मिलन हो, जिससे उत्पन्न संतान और भी अधिक प्रतिभावान हो।

कुल का दीपक और पुत्र की प्रधानता का वैज्ञानिक पक्ष

धार्मिक शब्दावली में पुत्र को 'कुल का दीपक' या वंश बढ़ाने वाला कहा गया है। इसका वैज्ञानिक कारण सामाजिक भेदभाव नहीं, बल्कि आनुवंशिक निरंतरता है:

* **Y-DNA की सुरक्षा:** चूंकि 'Y' गुणसूत्र केवल पुरुषों के माध्यम से ही आगे बढ़ सकता है, इसलिए किसी विशिष्ट 'ऋषि मूल' (गोत्र) को जीवित रखने के लिए पुत्र का होना अनिवार्य माना गया।
* **अस्तित्व का संरक्षण:** यदि किसी व्यक्ति को केवल पुत्रियां हैं, तो उसका 'Y' गुणसूत्र वहीं समाप्त हो जाता है। यही कारण है कि प्राचीन काल में वंश परंपरा को अक्षुण्ण रखने के लिए पुत्र को प्राथमिकता दी गई ताकि वह विशिष्ट 'DNA मार्कर्स' को अगली पीढ़ी तक ले जा सके।

सगोत्र विवाह के दोष: 'इनब्रीडिंग डिप्रेशन' (Inbreeding Depression)

हिंदू धर्म शास्त्र 'सगोत्र' (एक ही गोत्र में) विवाह का कड़ा निषेध करते हैं। इसके पीछे Recessive Genes (सुप्त जीन) का विज्ञान कार्य करता है:

* **अनुवांशिक बीमारियाँ:** एक ही गोत्र के स्त्री-पुरुष में समान दोषपूर्ण जीन होने की संभावना अधिक होती है। यदि समान गोत्र में विवाह होता है, तो संतान में जन्मजात विकृति, मानसिक मंदता या अनुवांशिक बीमारियाँ (जैसे थैलेसीमिया) होने का खतरा बढ़ जाता है।
* **हाइब्रिड विगर (Hybrid Vigour):** विज्ञान मानता है कि दो अलग-अलग और दूर के जीन समूहों के मिलन से उत्पन्न संतान अधिक प्रभावशाली, बुद्धिमान और रोग-प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) से युक्त होती है।
* **जीन का क्षरण:** सगोत्र विवाह से 'Y' गुणसूत्र कमजोर होने लगता है, जिससे वंश की सृजनात्मक शक्ति और पुरुषत्व में कमी आने की आशंका रहती है।

ऋषि-मुनियों के ज्ञान का आधार और ग्रंथ

प्राचीन ऋषियों ने सूक्ष्म ध्यान और प्रेक्षण के माध्यम से इन सिद्धांतों को प्रतिपादित किया था। इसके मुख्य प्रमाण निम्नलिखित ग्रंथों में मिलते हैं:

मनुस्मृति और धर्मशास्त्र

इनमें स्पष्ट कहा गया है कि असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः, अर्थात जो माता के कुल की न हो और पिता के गोत्र की न हो, वही कन्या विवाह के योग्य है।

आयुर्वेद (चरक एवं सुश्रुत संहिता)

इन ग्रंथों में गर्भाधान और उत्तम संतान प्राप्ति के लिए भिन्न कुल और रक्त समूहों के महत्व पर चर्चा की गई है।

बृहदारण्यक उपनिषद: यहाँ वंश और आनुवंशिकता के सूक्ष्म आध्यात्मिक पहलुओं का वर्णन मिलता है। गोत्र प्रवर और सपिंड व्यवस्था का पालन करना 'पिछड़ापन' नहीं बल्कि एक 'Advanced Biological Safety Net' है। यह सुनिश्चित करता है कि आने वाली पीढ़ियाँ मानसिक और शारीरिक रूप से विकृत न हों। सनातन धर्म की गोत्र व्यवस्था वास्तव में Eugenics (सुप्रजनन शास्त्र) का ही एक रूप है। इसका उद्देश्य एक स्वस्थ, मेधावी और दोषरहित समाज का निर्माण करना था। जहाँ आधुनिक विज्ञान आज 'जीन मैपिंग' की बात कर रहा है, वहीं हजारों वर्ष पूर्व ऋषियों ने गोत्र के माध्यम से हमारे DNA को सुरक्षित करने का सुरक्षा चक्र तैयार कर दिया था।

शिक्षा एवं परीक्षा प्रणाली में सुधार एवं जेन जी का आंदोलन

- प्रेम चतुर्वेदी, नोएडा

वर्तमान समय में शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि यह व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक चेतना और राष्ट्र के विकास की आधारशिला बन चुकी है। फिर भी हमारी शिक्षा एवं परीक्षा प्रणाली अनेक चुनौतियों से घिरी हुई है, जिनमें रटने की प्रवृत्ति, अंकों की होड़, मानसिक दबाव और व्यावहारिक ज्ञान की कमी प्रमुख हैं। विशेषकर आज की जेन जी—जो तकनीक-सक्षम, जागरूक और परिवर्तन की आकांक्षी है—इन खामियों को गहराई से महसूस करती है। इसलिए शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए जेन जी का एक व्यवस्थित और सकारात्मक आंदोलन अत्यंत आवश्यक हो गया है। सबसे पहले, वर्तमान शिक्षा प्रणाली की प्रमुख समस्याओं को समझना जरूरी है। हमारी प्रणाली अभी भी काफी हद तक पारंपरिक ढांचे पर आधारित है, जिसमें छात्र को जानकारी याद करने और परीक्षा में उसे दोहराने पर अधिक बल दिया जाता है। इससे छात्रों की रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान क्षमता का विकास बाधित होता है। परीक्षाएं ज्ञान के समग्र आकलन के बजाय केवल लिखित उत्तरों तक सीमित रह जाती हैं, जिससे छात्र वास्तविक जीवन की चुनौतियों के लिए पूरी तरह तैयार नहीं हो पाते। दूसरी बड़ी समस्या परीक्षा-केंद्रित मानसिकता है। आज के छात्र का अधिकांश समय परीक्षा की तैयारी में ही व्यतीत होता है, जिससे सीखने का आनंद समाप्त हो जाता है। अच्छे अंक प्राप्त करना ही सफलता का एकमात्र मानदंड बन गया है, जबकि जीवन में सफलता के लिए कौशल, नैतिकता और व्यावहारिक समझ भी उतनी ही आवश्यक है। इस दबाव के कारण छात्रों में तनाव, चिंता और अवसाद जैसी समस्याएं भी बढ़ रही हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षा में समानता और समावेशिता की कमी भी एक गंभीर मुद्दा है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच संसाधनों की असमानता, डिजिटल विभाजन और गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों की कमी शिक्षा के स्तर को प्रभावित करती है। इससे प्रतिभाशाली छात्र भी अवसरों के अभाव में पीछे रह जाते हैं।

इन समस्याओं के समाधान के लिए शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार की आवश्यकता है। सबसे पहले, पाठ्यक्रम को ऐसा बनाया जाना चाहिए जो छात्रों की जिज्ञासा और रचनात्मकता को बढ़ावा दे। केवल सैद्धांतिक ज्ञान के बजाय व्यावहारिक अनुभव, प्रोजेक्ट-आधारित शिक्षण और कौशल विकास पर ध्यान देना चाहिए। इसके साथ ही, डिजिटल तकनीक का प्रभावी उपयोग करके शिक्षा को अधिक सुलभ और रोचक बनाया जा सकता है।

परीक्षा प्रणाली में भी सुधार अत्यंत आवश्यक है। मूल्यांकन केवल एक बार होने वाली लिखित परीक्षा पर आधारित न होकर निरंतर और बहुआयामी होना चाहिए। इसमें प्रोजेक्ट, प्रेजेंटेशन, समूह कार्य और व्यवहारिक परीक्षण को शामिल किया जाना चाहिए। इससे छात्र के समग्र विकास का सही आकलन हो सकेगा और रटने की प्रवृत्ति में कमी आएगी। अब प्रश्न उठता है कि इन सुधारों को लागू करने में जेन जी की क्या भूमिका हो सकती है। जेन जी वह पीढ़ी है जो इंटरनेट, सोशल मीडिया और नई तकनीकों के साथ पली-बढ़ी है। यह पीढ़ी अधिक जागरूक, अभिव्यक्तिशील और परिवर्तन के प्रति संवेदनशील है। इसलिए यह शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए एक सशक्त आंदोलन खड़ा कर सकती है। हालांकि, यह आंदोलन उग्र या अव्यवस्थित न होकर सुव्यवस्थित और सकारात्मक होना चाहिए। जेन जी को चाहिए कि वे अपनी समस्याओं और सुझावों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करें। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन याचिकाओं और संवाद के माध्यम से वे सरकार और शैक्षणिक संस्थानों तक अपनी बात पहुंचा सकते हैं। इसके साथ ही, शिक्षकों और अभिभावकों के साथ सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाना भी आवश्यक है, ताकि सभी मिलकर एक बेहतर प्रणाली का निर्माण कर सकें। जेन जी का आंदोलन केवल विरोध तक सीमित न होकर समाधान-केंद्रित होना चाहिए। उदाहरण के लिए, वे वैकल्पिक शिक्षण पद्धतियों को अपनाने, कौशल विकास कार्यक्रमों में भाग लेने और स्वयं सीखने की नई तकनीकों को विकसित करने में योगदान दे सकते हैं। इससे न केवल उनकी व्यक्तिगत प्रगति होगी, बल्कि शिक्षा प्रणाली में सकारात्मक बदलाव भी आएगा।

इसके अतिरिक्त, जेन जी को नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी को भी ध्यान में रखना चाहिए। उनका आंदोलन शांतिपूर्ण, रचनात्मक और उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए। इससे समाज में एक सकारात्मक संदेश जाएगा और उनके प्रयासों को व्यापक समर्थन मिलेगा। अंततः, यह कहा जा सकता है कि शिक्षा एवं परीक्षा प्रणाली में सुधार समय की आवश्यकता है। यदि हम एक सशक्त, आत्मनिर्भर और नवाचारशील राष्ट्र का निर्माण करना चाहते हैं, तो हमें अपनी शिक्षा प्रणाली को आधुनिक, समावेशी और व्यावहारिक बनाना होगा। इस दिशा में जेन जी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनका सुव्यवस्थित और सकारात्मक आंदोलन न केवल शिक्षा प्रणाली में बदलाव ला सकता है, बल्कि पूरे समाज को एक नई दिशा भी दे सकता है।

घर एवं लॉकर के इंश्योरेंसः आवश्यकता एवं प्रक्रिया

- रजत चतुर्वेदी, कोलकाता

आज के समय में आर्थिक सुरक्षा उतनी ही महत्वपूर्ण हो गई है जितनी शारीरिक सुरक्षा। बढ़ती महंगाई, प्राकृतिक आपदाओं, चोरी-डकैती और आकस्मिक दुर्घटनाओं के कारण व्यक्ति की जीवनभर की कमाई एक क्षण में नष्ट हो सकती है। ऐसे में घर एवं बैंक लॉकर का इंश्योरेंस (बीमा) एक महत्वपूर्ण सुरक्षा कवच के रूप में उभरकर सामने आता है। यह न केवल आपकी संपत्ति की रक्षा करता है बल्कि मानसिक शांति भी प्रदान करता है।

घर के इंश्योरेंस की आवश्यकता

घर व्यक्ति के जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति होती है। इसे बनाने में वर्षों की मेहनत और पूंजी लगती है। लेकिन आग, भूकंप, बाढ़, तूफान, चोरी या अन्य दुर्घटनाओं के कारण घर को भारी नुकसान हो सकता है। ऐसे में यदि घर का इंश्योरेंस कराया गया हो, तो नुकसान की भरपाई बीमा कंपनी द्वारा की जाती है।

घर के इंश्योरेंस में मुख्यतः दो चीजें शामिल होती हैं

- **संरचना (Structure Insurance)**: इसमें मकान की दीवारें, छत, फर्श आदि आते हैं।
- **सामग्री (Content Insurance)**: इसमें घर के अंदर मौजूद फर्नीचर, इलेक्ट्रॉनिक सामान, आभूषण आदि शामिल होते हैं। आजकल कई बीमा कंपनियां व्यापक पॉलिसी देती हैं, जिसमें प्राकृतिक आपदाओं से लेकर चोरी तक का कवर शामिल होता है।

घर के इंश्योरेंस के लाभ

- **आर्थिक सुरक्षाः** किसी भी नुकसान की स्थिति में वित्तीय सहायता मिलती है।
- **मानसिक शांतिः** अनहोनी की चिंता कम हो जाती है।
- **लोन सुविधाः** कई बैंक होम लोन के साथ इंश्योरेंस को प्राथमिकता देते हैं।
- **कम प्रीमियम में बड़ा कवरः** अपेक्षाकृत कम राशि में बड़ी सुरक्षा मिल जाती है।

बैंक लॉकर के इंश्योरेंस की आवश्यकता

लोग अपने कीमती आभूषण, दस्तावेज और अन्य महत्वपूर्ण वस्तुएं बैंक लॉकर में सुरक्षित रखते हैं। हालांकि, बैंक लॉकर पूरी तरह जोखिममुक्त नहीं होते। चोरी, आग, बैंक में लापरवाही या प्राकृतिक आपदा जैसी घटनाओं से नुकसान हो सकता है।

भारत में बैंक लॉकर की सुरक्षा के लिए कुछ नियम हैं, लेकिन बैंक की जिम्मेदारी सीमित होती है। यदि लॉकर में रखी वस्तुओं का नुकसान होता है, तो बैंक केवल सीमित मुआवजा देता है। इसलिए लॉकर में रखी वस्तुओं का अलग से इंश्योरेंस करवाना आवश्यक है।

लॉकर इंश्योरेंस के लाभ

कीमती वस्तुओं की सुरक्षा
सीमित बैंक जिम्मेदारी से बचाव
दस्तावेजों और आभूषणों का पूर्ण कवर
आपात स्थिति में आर्थिक सहायता
इंश्योरेंस की प्रक्रिया

घर एवं लॉकर के इंश्योरेंस की प्रक्रिया काफी सरल होती है। इसे निम्न चरणों में समझा जा सकता हैः

1. **आवश्यकता का आकलन** : सबसे पहले यह तय करें कि आपको किस प्रकार का कवर चाहिए। घर की कुल कीमत, उसमें रखी वस्तुओं का मूल्य और लॉकर में रखी चीजों की अनुमानित कीमत का आकलन करें।
2. **सही बीमा कंपनी का चयन** : बाजार में कई बीमा कंपनियां उपलब्ध हैं। उनकी पॉलिसी, प्रीमियम, कवर और क्लेम प्रक्रिया की तुलना करें। विश्वसनीय कंपनी का चयन करें।
3. **अपनी जरूरत के अनुसार पॉलिसी चुनें** :

बेसिक पॉलिसी
व्यापक (Comprehensive) पॉलिसी
विशेष कवर (जैसे ज्वेलरी इंश्योरेंस)

4. दस्तावेज जमा करना

पहचान पत्र
पते का प्रमाण
संपत्ति के दस्तावेज
वस्तुओं की सूची एवं अनुमानित मूल्य

5. प्रीमियम का भुगतान

पॉलिसी के अनुसार प्रीमियम जमा करें। यह मासिक, वार्षिक या एकमुश्त हो सकता है।

6. पॉलिसी जारी होनासभी औपचारिकताएं पूरी होने के बाद बीमा कंपनी पॉलिसी जारी कर देती है।

यदि किसी कारणवश नुकसान होता है, तो क्लेम की प्रक्रिया अपनानी होती है:

तुरंत बीमा कंपनी को सूचित करें।
नुकसान का प्रमाण (फोटो, वीडियो आदि) दें।
पुलिस रिपोर्ट (चोरी की स्थिति में) दर्ज कराएं।
आवश्यक दस्तावेज जमा करें।
सर्वेयर द्वारा जांच के बाद मुआवजा दिया जाता है।
पॉलिसी की शर्तों को ध्यान से पढ़ें।
सही मूल्यांकन कराएं, ताकि क्लेम में समस्या न हो।
समय-समय पर पॉलिसी अपडेट करें।
प्रीमियम समय पर भरें।

घर और लॉकर का इंश्योरेंस आज के समय की आवश्यकता बन चुका है। यह न केवल आपकी संपत्ति की सुरक्षा करता है बल्कि भविष्य की अनिश्चितताओं से भी बचाव करता है। थोड़ी सी जागरूकता और सही योजना के माध्यम से आप अपने जीवन की मेहनत से अर्जित संपत्ति को सुरक्षित रख सकते हैं। इसलिए हर व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने घर और लॉकर का उचित बीमा कराकर आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करे।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

- पूनम चतुर्वेदी, आगरा

मथुरा में जन्माष्टमी महोत्सव का महत्व अत्यंत विशेष और अद्वितीय है, क्योंकि यही वह पावन नगरी है जहाँ भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था। प्रत्येक वर्ष भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को जन्माष्टमी का पर्व बड़े उत्साह, श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जाता है। मथुरा, वृंदावन और गोकुल में इस दिन का माहौल अत्यंत दिव्य और आध्यात्मिक होता है, जो देश-विदेश से आने वाले लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है।

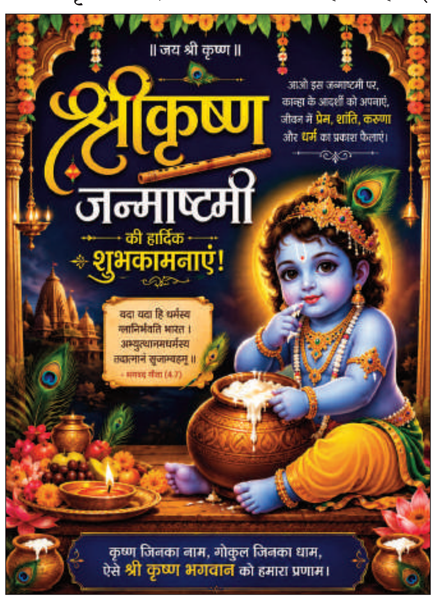

जन्माष्टमी के अवसर पर मथुरा के प्रमुख मंदिरों, विशेष रूप से श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर को भव्य रूप से सजाया जाता है। मंदिरों में रंग-बिरंगी रोशनी, फूलों की मालाएं और आकर्षक झांकियाँ सजाई जाती हैं, जो भगवान कृष्ण के जीवन की प्रमुख घटनाओं को दर्शाती हैं। श्रद्धालु पूरे दिन उपवास रखते हैं और मध्यरात्रि में भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के समय विशेष पूजा-अर्चना करते हैं।

रात्रि 12 बजे जैसे ही भगवान कृष्ण के जन्म का समय होता है, पूरे मंदिर परिसर में घंटों और शंखों की ध्वनि गूंज उठती है। नंद के आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की के जयघोष के साथ वातावरण भक्तिमय हो जाता है। इसके बाद भगवान का अभिषेक किया जाता है, जिसमें दूध, दही, घी, शहद और गंगाजल का उपयोग होता है। इस अभिषेक को देखने के लिए भक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है। मथुरा में जन्माष्टमी के दौरान रासलीला और भजन-कीर्तन का विशेष आयोजन होता है। कलाकार भगवान कृष्ण और राधा के जीवन से जुड़े प्रसंगों का मंचन करते हैं, जो दर्शकों को भावविभोर कर देता है। वृंदावन में होने वाली रासलीला तो विशेष रूप से प्रसिद्ध है, जहाँ भक्त भगवान के प्रेम और लीला का आनंद लेते हैं। जन्माष्टमी के अवसर पर मथुरा के बाजारों में भी विशेष रौनक देखने को मिलती है। जगह-जगह मिठाइयों, खिलौनों और धार्मिक वस्तुओं की दुकानें सजाई जाती हैं। श्रद्धालु भगवान कृष्ण के लिए नए वस्त्र, आभूषण और झूले खरीदते हैं और अपने घरों में भी पूजा का आयोजन करते हैं। इस प्रकार, मथुरा में जन्माष्टमी महोत्सव केवल एक धार्मिक उत्सव ही नहीं, बल्कि आस्था, संस्कृति और परंपरा का अद्भुत संगम है। यह पर्व भगवान कृष्ण के जीवन से समाज में एकता और सद्भावना का संदेश फैलाता है।

समय की ट्रेन : रेलवे स्टेशन...

- **मनीष चतुर्वेदी**, लखनऊ

यह केवल यात्राओं की शुरुआत का स्थान नहीं होता, बल्कि अनगिनत कहानियों का संगम होता है। यहाँ हर चेहरा कुछ कहता है। कोई मिलने जा रहा होता है कोई बिछड़कर लौट रहा होता है

कोई सपनों की तलाश में घर छोड़ रहा होता है

और कोई शायद आख़िरी बार किसी अपने को विदा करके लौट रहा होता है।

उस दिन मैं भी एक लंबी यात्रा पर निकला था।
सुबह का समय था।
स्टेशन पर वही परिचित चहल–पहल
कुलियों की भागदौड़
चाय वाले की पुकार—
चाय गरम चाय
कहीं समोसों की खुशबू
कहीं माँ अपने बेटे के बैग में बार–बार कुछ रख रही थी
और पिता बार–बार समझा रहे थे,सामान संभालकर रखना बेटा
घोषणा हुई
मेरी ट्रेन प्लेटफ़ॉर्म पर आ चुकी थी।
मैं अपनी पसंदीदा खिड़की वाली सीट पर जाकर बैठ गया।
कुछ ही क्षणों बाद इंजन ने लंबी सीटी बजाई
हल्का–सा झटका लगा
और प्लेटफ़ॉर्म धीरे–धीरे पीछे छूटने लगा।
हाथ हिलाते लोग छोटे होते गए
फिर भीड़ में खो गए
और मैं
एक नए सफ़र पर निकल पड़ा।
खिड़की से बाहर का दृश्य
हरे–भरे खेत
सरसों के पीले फूल
लहराती गेहूँ की बालियाँ
सब कुछ मन को छू रहा था।
पटरी के किनारे कुछ बच्चे ट्रेन को देखकर हाथ हिला रहे थे।
मैंने भी मुस्कुराकर हाथ हिलाया।
और अचानक
अपना बचपन याद आ गया।
वह बचपन
जब छोटी–सी चीज़ों में भी खुशियाँ मिल जाती थीं।
बारिश में भी
पतंग में भी
नई पेंसिल में भी
माँ की गोद में पूरी दुनिया थी
और पिता की उँगली सबसे सुरक्षित सहारा।
तभी सामने बैठे एक नन्हे बच्चे ने पूछा—
अंकल आपकी उम्र कितनी है?
मैं मुस्कुरा दिया।
मैंने उम्र बताई।

वह कुछ पल मुझे देखता रहा
फिर बोला—
आप तो बहुत बड़े हो गए!
पूरा डिब्बा हँस पड़ा।
लेकिन मेरे मन में एक सवाल गूँजने लगा—
मैं सचमुच कब इतना बड़ा हो गया?
कब स्कूल छूटा
कब कॉलेज खत्म हुआ
कब नौकरी शुरू हुई
कब मेरी जन्मभूमि मेरा घर छूट गया
कब शादी हुई
कब बच्चे बड़े हो गएऔर निकल गए
समय चुपचाप आगे बढ़ता रहा
और मैं समझ ही नहीं पाया।
दोपहर तक पूरा डिब्बा एक परिवार बन चुका था।
किसी ने पराँठे निकाले
किसी ने पूड़ी-सब्ज़ी
किसी ने अचार बाँटा
कोई राजनीति पर चर्चा कर रहा था
कोई बच्चों के भविष्य की चिंता
कोई ताश खेल रहा था
और मैं कुल्हड़ की चाय की मिट्टी में बचपन की खुशबू खोज रहा था।
फिर शाम उतर आई।
सूरज खेतों के पीछे छिप गया।
पहले बड़े स्टेशन पर सामने बैठे बुज़ुर्ग दंपती उतर गए।
उतरते समय उन्होंने मुस्कुराकर कहा—
अच्छा बेटा फिर कभी मुलाक़ात होगी।
मैं जानता था
शायद अब कभी नहीं होगी।
ज़िंदगी भी तो ऐसी ही है।
कुछ लोग बचपन तक साथ चलते हैं
कुछ कॉलेज तक
कुछ नौकरी तक
फिर अपने-अपने स्टेशन पर उतर जाते हैं।
रात गहरा गई।
डिब्बे में सन्नाटा था।
सिर्फ़ पटरियों की आवाज़—
खड़ खड़ खड़
तभी टीटीई आया।
टिकट देखकर बोला—
अब आपका स्टेशन आने में दो-तीन घंटे ही बचे हैं।
बस
यही एक वाक्य
और मेरे भीतर जैसे समय ठहर गया।
सुबह तक जिस मंज़िल का इंतज़ार था
अब मन कह रहा था—
काश यह सफ़र थोड़ा और लंबा होता।
मैंने खिड़की के शीशे में अपना चेहरा देखा।
उसमें मुझे अपना पूरा जीवन दिखाई देने लगा।
माँपितादोस्तशिक्षक...रिश्तेदारऔर वे सभी लोग
जो कभी मेरे साथ थे
लेकिन आज स्मृतियों में बसते हैं।
तब समझ आया—
उम्र बढ़ने का सबसे बड़ा दुख बूढ़ा होना नहीं
बल्कि यह है कि यादों का कारवाँ बहुत बड़ा हो जाता हैऔर उस कारवाँ के बहुत-से मुसाफ़िर रास्ते में उतर चुके होते हैं।
धीरे-धीरे ट्रेन की रफ़्तार कम होने लगी।स्टेशन की रोशनियाँ दिखाई देने लगीं।
मैंने अपना बैग उठाया।
पूरे डिब्बे पर एक नज़र डाली—
खाली सीटेंमुड़े हुए कंबलखाली कुल्हड़अधूरी बातें
और ढेर सारी यादेंतभी मन ने कहा—
ज़िंदगी का अर्थ आख़िरी स्टेशन तक पहुँचना नहीं है।ज़िंदगी का अर्थ तो उन पलों में है
जब कोई अजनबी अपना खाना आपके साथ बाँट देता हैजब कोई बच्चा आपको देखकर मुस्कुरा देता हैजब माँ बिना पूछे आपकी पसंद का भोजन बना देती हैजब पिता बिना कुछ कहे आपकी चिंता करते हैंजब दोस्त बिना वजह हँसा देते हैं
और जब अपने, बिना किसी स्वार्थ के, आपका हाथ थाम लेते हैं।
यही जीवन है।
बाक़ी सबसिर्फ़ स्टेशन हैं।
और अंत मेंबस इतना ही—
हम सब समय नाम की एक ही ट्रेन के मुसाफ़िर हैं।
किसी का स्टेशन पहले आता हैकिसी का थोड़ा बाद में
इसलिएजब तक आपकी ट्रेन चल रही है—
मुस्कुराइएप्रेम कीजिएक्षमा कीजिएधन्यवाद कहिए
और अपने लोगों को यह एहसास कराइए कि वे आपके लिए कितने अनमोल हैं।
क्योंकि जिस दिन टीटीई मुस्कुराकर कहेगा—
अगला स्टेशन आपका है
उस दिन मंज़िल नहीं पूरा सफ़र याद आएगा।

सासु - माँ की एक शर्त

- कन्हैयालाल

बहू... इस घर की चाबी तुम्हें तभी दूँगी, जब तुम मेरी एक शर्त मानोगी....!

नई-नवेली दुल्हन काव्या ने चौंककर अपनी सास कमला देवी की ओर देखा।

उसने सोचा, शायद मांजी घर के नियम बताएँगी... सुबह चार बजे उठना होगा, सिर पर पल्लू रखना होगा या किसी से ऊँची आवाज़ में बात नहीं करनी होगी।

काव्या ने धीरे से कहा,

जी मांजी... आपकी हर बात मानूँगी।

कमला देवी अलमारी से चाबियों का बड़ा गुच्छा लेकर आईं। उन्होंने उसे काव्या की हथेली पर रखते हुए कहा,

ये घर की चाबियाँ हैं... लेकिन मेरी शर्त सिर्फ एक है...!!

क्या शर्त है मांजी??

कमला देवी ने उसकी आँखों में देखते हुए कहा,

इस घर में कभी किसी की गलती का फैसला उसी दिन मत करना...!!

काव्या को बात समझ नहीं आई।

मतलब????

कमला देवी मुस्कुराईं।

गुस्से में इंसान गलती नहीं देखता, सिर्फ दोषी ढूँढता है...!!

इसलिए इस घर में चौबीस घंटे का नियम है। कोई भी नाराज़गी हो, फैसला अगले दिन होगा।

काव्या को यह बात अजीब लगी, लेकिन उसने सिर हिला दिया।

कुछ दिन बाद सुबह-सुबह हड़कंप मच गया।

ससुर जी की दवा की शीशी फर्श पर टूट गई थी....!!

वह दवा बहुत महँगी थी और उसी दिन लानी थी।

कमला देवी ने कुछ नहीं कहा।

घर में काम करने वाली बाई घबराकर बोली,

मालकिन... मुझसे गलती हो गई।

कमला देवी ने शांत स्वर में कहा,

कोई बात नहीं। आज इस बारे में कोई कुछ नहीं बोलेगा।

काव्या हैरान रह गई।

उसे लगा, इतनी बड़ी गलती पर भी डाँट नहीं?

अगले दिन कमला देवी ने बाई को बुलाया।

कल तुम बहुत डर गई थीं?

बाई रोने लगी।

हाँ मालकिन... रातभर नींद नहीं आई।

कमला देवी ने उसका हाथ पकड़ लिया।

देखो, गलती दो तरह की होती है—एक लापरवाही की, दूसरी इंसान होने की। तुमने जानबूझकर नहीं तोड़ा था। आगे ध्यान रखना।

बाई रोते-रोते उनके पैर छूने लगी।काव्या यह सब देखती रही।

एक सप्ताह बाद खुद काव्या से बड़ी भूल हो गई।

उसने जल्दी में वॉशिंग मशीन में ससुर जी की ऊनी शॉल डाल दी।

शॉल सिकुड़ गई।

उसकी कीमत भी बहुत थी और वह ससुर जी को उनके पिता की निशानी के रूप में मिली थी।

काव्या के हाथ काँपने लगे।

अब तो मांजी बहुत नाराज़ होंगी।

लेकिन कमला देवी ने वही कहा,

आज कुछ नहीं बोलेंगे।

उस रात काव्या रोती रही।

उसे अपनी गलती बार-बार याद आती रही।

अगले दिन उसने खुद सास के सामने जाकर कहा,

मांजी... मुझे माफ़ कर दीजिए। मैं बहुत शर्मिंदा हूँ।

कमला देवी ने उसे गले लगा लिया।

देखा बहू... अगर मैं कल ही डाँट देती, तो तुम सिर्फ मेरी डाँट याद रखती। लेकिन एक रात सोचने के बाद तुम्हें अपनी गलती खुद समझ आ गई।

काव्या की आँखों से आँसू बह निकले।

कमला देवी बोलीं,

डर इंसान को कुछ समय के लिए बदलता है, लेकिन समझ पूरी ज़िंदगी के लिए।

समय बीतता गया।

काव्या अब इस नियम को समझने लगी थी।

एक दिन अमित ऑफिस से लौटे तो बहुत चिड़चिड़े थे।

उन्होंने बिना बात किए खाना खाया और कमरे में चले गए।

काव्या को बहुत बुरा लगा।उसने तय कर लिया कि आज वह भी उनसे बात नहीं करेगी।

इतने में कमला देवी उसके पास आईं।

क्या हुआ?

मांजी, इन्होंने मुझसे ठीक से बात तक नहीं की।

कमला देवी मुस्कुराईं।

फैसला आज करोगी या कल?

काव्या चुप हो गई।

अगली सुबह अमित खुद उसके पास आए।

माफ़ करना... कल दुकान में बहुत बड़ा नुकसान हो गया था। दिमाग काम नहीं कर रहा था।

काव्या को अपनी सास की सीख याद आ गई।अगर उसने उसी रात झगड़ा कर लिया होता, तो बात बढ़ जाती।

उसने मुस्कुराकर कहा,अब चाय पीजिए... बाकी बातें बाद में।

कुछ महीनों बाद पड़ोस में रहने वाली एक बुज़ुर्ग महिला का बेटा उन्हें वृद्धाश्रम छोड़ आया।

पूरा मोहल्ला उस बेटे को कोस रहा था।

काव्या भी बोली,

कैसा बेटा है!

लेकिन कमला देवी ने कहा,

पूरी कहानी जाने बिना किसी पर फैसला मत करो।

दो दिन बाद पता चला कि बेटा खुद कैंसर से जूझ रहा था और इलाज के लिए दूसरे शहर जा रहा था। उसने माँ को अकेला छोड़ने के बजाय ऐसी जगह रखा था जहाँ उनकी देखभाल हो सके।काव्या का सिर झुक गया।

कमला देवी ने कहा,

बहू, आधा सच अक्सर पूरे झूठ से ज्यादा खतरनाक होता है।

उस दिन के बाद काव्या ने लोगों पर तुरंत राय बनाना छोड़ दिया।

कमला देवी बूढ़ी हो गईं।एक दिन उन्होंने वही चाबियों का गुच्छा फिर से काव्या के हाथ में रखा।

आज से यह घर पूरी तरह तुम्हारा है।काव्या की आँखें भर आईं।

मांजी, आपने मुझे चाबियाँ तो पहले ही दे दी थीं।कमला देवी मुस्कुराईं।

नहीं बहू... उस दिन मैंने तुम्हें सिर्फ लोहे की चाबियाँ दी थीं। आज मैं तुम्हें इस घर के रिश्तों की चाबी दे रही हूँ।

वह कौन-सी?

कमला देवी ने धीमे से कहा,

जिस घर में लोग एक-दूसरे को समझने से पहले फैसला नहीं सुनाते, वहाँ रिश्ते कभी बूढ़े नहीं होते।

कुछ वर्षों बाद जब काव्या खुद सास बनी, उसकी बहू से गलती से उसकी सबसे प्रिय चाय की केतली टूट गई।

बहू डर के मारे रोने लगी।

काव्या ने मुस्कुराकर सिर्फ इतना कहा,

बेटी... आज नहीं। इस घर में किसी की गलती का फैसला अगले दिन होता है।

बहू हैरान होकर उसे देखने लगी।

काव्या की आँखों में अपनी सास की छवि तैर रही थी।

उसे समझ आ गया था कि घर दीवारों से नहीं, बल्कि उन नियमों से बनते हैं जो रिश्तों को टूटने से बचाते हैं।

उस दिन से उस घर में एक परंपरा शुरू हुई—गुस्से में कभी फैसला नहीं होगा। पहले एक रात गुज़रेगी, फिर बात होगी।

शायद यही वजह थी कि उस घर में बर्तन कभी-कभी टूटते थे, लेकिन रिश्ते कभी नहीं!

उज्जैन का प्रसिद्ध नागचंद्रेश्वर मंदिर

उज्जैन का प्रसिद्ध नागचंद्रेश्वर मंदिर महाकालेश्वर मंदिर की ऊपरी मंजिल (तीसरी मंजिल) पर स्थित है। यह मंदिर आमतौर पर जनता के दर्शन के लिए वर्ष में एक बार खुलता है। यह मंदिर साल में केवल एक बार नागपंचमी के पावन पर्व पर 24 घंटे के लिए श्रद्धालुओं के दर्शन हेतु खोला जाता है। अदभुत प्रतिमा यहाँ 11वीं शताब्दी की एक बेहद दुर्लभ और अद्भुत प्रतिमा है, जिसमें भगवान शिव और माता पार्वती दशमुखी/सप्तमुखी सर्प शय्या (फन फैलाए नागों के आसन) पर विराजमान हैं।ऐतिहासिक महत्वः इस प्राचीन मंदिर का निर्माण परमार राजा भोज द्वारा लगभग 1050 ईस्वी में करवाया गया था। बाद में 1732 में सिंधिया राजवंश के दौरान इसका जीर्णोद्धार किया गया। मान्यताः ऐसी मान्यता है कि नागपंचमी के दिन नागराज तक्षक इस मंदिर में स्वयं विराजमान

होते हैं। यहाँ दर्शन करने से सभी प्रकार के सर्प दोष से मुक्ति मिलती है।

– संपादक

हरितालिका व्रत: इतिहास, महत्व

- विभा अतुल चतुर्वेदी, लखनऊ

भारतीय संस्कृति में व्रत और त्योहारों का विशेष महत्व है। इनमें हरितालिका तीज का व्रत विशेष रूप से महिलाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह व्रत मुख्यतः उत्तर भारत, मध्य भारत और नेपाल के कुछ भागों में बड़े श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है। यह पर्व भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को आता है और मुख्यतः भगवान शिव एवं माता पार्वती को समर्पित है।

हरितालिका

शब्द दो भागों से मिलकर बना है—'हरित' और 'आलिका'। 'हरित' का अर्थ है हरण करना अर्थात अपहरण, और 'आलिका' का अर्थ है सखी या मित्र। इस व्रत की कथा के अनुसार, माता पार्वती की सखियों ने उनका हरण कर उन्हें एकांत स्थान पर ले जाकर भगवान शिव की तपस्या करने में सहायता की थी। इसी कारण इसे हरितालिका व्रत कहा जाता है।

इस व्रत का मुख्य उद्देश्य विवाहित स्त्रियों के लिए अखंड सौभाग्य की प्राप्ति और पति की लंबी आयु की कामना करना होता है, जबकि अविवाहित कन्याएं योग्य वर की प्राप्ति के लिए यह व्रत करती हैं।

पौराणिक मान्यता के अनुसार, माता पार्वती ने भगवान शिव को पति के रूप में प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या की थी। उनके पिता दक्ष चाहते थे कि उनका विवाह भगवान विष्णु से हो। जब यह बात पार्वती जी को ज्ञात हुई तो वे अत्यंत दुखी हुईं। उनकी सखी ने उन्हें इस विवाह से बचाने के लिए जंगल में ले जाकर छिपा दिया।

वहीं पार्वती जी ने कठोर तपस्या आरंभ की और भगवान शिव को प्रसन्न किया। उनकी अटूट भक्ति और तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया। यही दिन हरितालिका तीज के रूप में मनाया जाता है। इस प्रकार यह व्रत स्त्रियों के लिए समर्पण, निष्ठा और सच्चे प्रेम का प्रतीक बन गया।

हरितालिका व्रत की तैयारी एक दिन पूर्व से ही शुरू हो जाती है। महिलाएं घर की साफ-सफाई करती हैं और पूजा के लिए आवश्यक सामग्री एकत्रित करती हैं। पूजा सामग्री में मिट्टी से बनी भगवान शिव और माता पार्वती की प्रतिमा, फल, फूल, बेलपत्र, धतूरा, श्रृंगार सामग्री, पंचामृत, दीपक, धूप आदि शामिल होते हैं।

व्रत के एक दिन पहले संध्या भोजन किया जाता है, जिसमें महिलाएं शुद्ध और सात्विक भोजन ग्रहण करती हैं। इसके बाद अगले दिन निर्जला व्रत का संकल्प लिया जाता है।

हरितालिका व्रत के दिन महिलाएं प्रातःकाल जल्दी उठकर स्नान करती हैं और साफ-सुथरे वस्त्र धारण करती हैं। इसके बाद पूजा स्थल को सजाया जाता है और वहां बालू या मिट्टी से शिव-पार्वती एवं गणेश जी की प्रतिमा बनाई जाती है।

सबसे पहले गणेश जी का पूजन किया जाता है।

इसके बाद भगवान शिव और माता पार्वती का विधिवत पूजन किया जाता है। उन्हें फल, फूल, वस्त्र, श्रृंगार सामग्री, बेलपत्र आदि अर्पित किए जाते हैं। इसके साथ ही हाथ में दिया, नारियल, खीरा व नीबू लेकर अरग गीत (अलग से लिखा है) गाकर जलाभिषेक करते हैं। फिर हरितालिका व्रत कथा का श्रवण या पाठ किया जाता है।

पूजा के दौरान महिलाएं विशेष रूप से सुहाग की सामग्री जैसे चूड़ियां, बिंदी, मेहंदी, सिंदूर आदि अर्पित करती हैं। यह सौभाग्य का प्रतीक मानी जाती हैं।

हरितालिका व्रत निर्जला रखा जाता है, अर्थात जल तक ग्रहण नहीं किया जाता।

व्रत का पारण

अगले दिन यानी चतुर्थी तिथि को प्रातःकाल पूजा करने के बाद व्रत का पारण किया जाता है। पारण के समय भगवान को भोग अर्पित कर प्रसाद ग्रहण किया जाता है। इसके बाद महिलाएं जल और भोजन ग्रहण करती हैं। हरितालिका व्रत महिलाओं के बीच एकता, प्रेम और सहयोग की भावना को बढ़ाता है। इस दिन महिलाएं सजती-संवरती है।

यह पर्व भारतीय संस्कृति में स्त्री की आस्था, शक्ति और समर्पण का प्रतीक है। साथ ही यह पारिवारिक जीवन में प्रेम और स्थिरता को बनाए रखने का संदेश देता है। हरितालिका व्रत न केवल धार्मिक आस्था को मजबूत करता है, बल्कि महिलाओं के जीवन में आत्मबल, धैर्य और विश्वास को भी बढ़ाता है। माता पार्वती की तरह अटूट श्रद्धा और समर्पण के साथ किया गया यह व्रत जीवन में सुख, शांति और समृद्धि लाने वाला माना जाता है।

मुंबई का गणेशोत्सव

- शिखा पाठक, थाणे

मुंबई का गणेशोत्सव भारत के सबसे भव्य और लोकप्रिय धार्मिक उत्सवों में से एक है। यह उत्सव भगवान गणेश के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है और पूरे दस दिनों तक अत्यंत श्रद्धा, उत्साह और सांस्कृतिक रंगों के साथ चलता है। इसकी शुरुआत भाद्रपद मास की शुक्ल चतुर्थी से होती है और अनंत चतुर्दशी के दिन गणपति विसर्जन के साथ इसका समापन होता है। मुंबई में गणेशोत्सव का विशेष महत्व इसलिए भी है क्योंकि इसे सार्वजनिक रूप से मनाने की परंपरा लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने स्वतंत्रता संग्राम के समय शुरू की थी। इसका उद्देश्य समाज को एकजुट करना और राष्ट्रीय चेतना को जागृत करना था। आधुनिक उत्सव सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक एकता का प्रतीक बन चुका है।

गणेश चतुर्थी के दिन लोग अपने घरों और सार्वजनिक पंडालों में भगवान गणेश की मूर्तियों की स्थापना करते हैं। स्थापना के समय विधि-विधान से पूजा, मंत्रोच्चार और आरती की जाती है।

मुंबई के प्रसिद्ध पंडालों—जैसे लालबागचा राजा, सिद्धिविनायक गणपति और गणेश गल्ली—में लाखों श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं। इन पंडालों की सजावट, थीम और भव्यता अद्भुत होती है, जो हर वर्ष नई-नई झलकियाँ प्रस्तुत करती हैं।

दस दिनों तक प्रतिदिन सुबह और शाम आरती होती है, जिसमें भक्तजन पूरे उत्साह के साथ भाग लेते हैं। गणेशोत्सव के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन होता है, जैसे नृत्य, संगीत, नाटक और सामाजिक जागरूकता से जुड़े भव्य कार्यक्रम होते हैं। यह उत्सव केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज के हर वर्ग को जोड़ने का माध्यम बन गया है।

मुंबई की खासियत यह है कि यहाँ गणेशोत्सव एक सामुदायिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। लोग एक-दूसरे के घरों में जाकर गणपति के दर्शन करते हैं और प्रसाद के रूप में मोदक, लड्डू आदि का वितरण करते हैं। मोदक को भगवान गणेश का प्रिय भोग माना जाता है, इसलिए इसका विशेष महत्व होता है।

उत्सव के अंतिम दिन, यानी अनंत चतुर्दशी को, गणपति बप्पा की मूर्तियों का समुद्र या अन्य जल स्रोतों में विसर्जन किया जाता है। इस दिन मुंबई की सड़कों पर भव्य शोभायात्राएँ निकलती हैं,

जिनमें ढोल-ताशे, नृत्य और

गणपति बप्पा मोरया के जयघोष से पूरा वातावरण गूंज उठता है। यह दृश्य अत्यंत भावुक और उत्साहपूर्ण होता है, क्योंकि भक्त अपने प्रिय गणपति को विदा करते हैं और अगले वर्ष पुनः आने की प्रार्थना करते हैं।

हाल के वर्षों में पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए लोग इको-फ्रेंडली गणेश मूर्तियों का उपयोग करने लगे हैं और कृत्रिम तालाबों में विसर्जन को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे समुद्री प्रदूषण को कम करने में मदद मिल रही है। इस प्रकार, मुंबई का दस दिवसीय गणेशोत्सव केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक विविधता और सामूहिक आनंद का अद्भुत उदाहरण है।

समाज में घटती संवेदनशीलता

- चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

आज का समाज तकनीकी रूप से जितना उन्नत हुआ है, उतना ही मानवीय संवेदनाओं के स्तर पर कई प्रश्न भी खड़े हुए हैं। सुविधाएँ बढ़ी हैं, संचार के साधन तेज हुए हैं, लेकिन लोगों के बीच आत्मीयता, सहानुभूति और एक-दूसरे के लिए समय निकालने की प्रवृत्ति कम होती दिखाई देती है। समाज में घटती संवेदनशीलता केवल एक व्यक्तिगत समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक ताने-बाने को प्रभावित करने वाली चुनौती है। सबसे बड़ा कारण लोगों के पास एक-दूसरे के लिए समय का अभाव है। व्यस्त दिनचर्या, नौकरी, व्यापार और डिजिटल दुनिया ने परिवार तथा मित्रों के साथ बिताए जाने वाले समय को सीमित कर दिया है। पहले लोग सुख-दुख में सहज रूप से साथ खड़े होते थे, आज अक्सर केवल संदेश या सोशल मीडिया पोस्ट तक संवेदना सीमित रह जाती है। किसी की परेशानी को सुनने का धैर्य भी कम होता जा रहा है। दूसरा महत्वपूर्ण कारण प्राथमिकताओं में बदलाव है। पहले परिवार, रिश्ते और समाज जीवन के केंद्र में होते थे। अब आर्थिक सफलता, करियर, प्रतिष्ठा और व्यक्तिगत उपलब्धियाँ प्राथमिकता बन गई हैं। सफलता आवश्यक है, परंतु यदि उसके कारण रिश्ते कमजोर होने लगें तो समाज का भावनात्मक आधार भी कमजोर हो जाता है।

तीसरा कारण बदलती जीवनशैली है। महानगरों का तेज जीवन, प्रतिस्पर्धा, तनाव और लगातार व्यस्त रहने की संस्कृति ने लोगों को मशीन जैसा बना दिया है। पड़ोसियों को जानना, सामूहिक कार्यक्रमों में भाग लेना या सामाजिक जिम्मेदारियाँ निभाना पहले की तुलना में कम हो गया है। डिजिटल संपर्क बढ़ा है, लेकिन मानवीय निकटता घटी है।

चौथा कारण आत्मकेंद्रित सोच का बढ़ना है। आधुनिक जीवन में 'मैं' की भावना 'हम' पर भारी पड़ती दिखाई देती है। व्यक्ति अपने लाभ, सुविधा और इच्छाओं को अधिक महत्व देता है। परिणामस्वरूप दूसरों के दुःख, संघर्ष और आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशीलता कम होती जाती है। समाज तभी मजबूत बनता है जब व्यक्ति अपने हित के साथ-साथ सामूहिक हित को भी महत्व दे।

पाँचवाँ महत्वपूर्ण पक्ष अंतिम संस्कार, शोकसभा तथा अन्य सामुदायिक रीति-रिवाजों में भागीदारी का कम होना है। पहले लोग दूर-दूर से अंतिम विदाई देने पहुँचते थे क्योंकि इसे केवल एक सामाजिक परंपरा नहीं बल्कि मानवीय कर्तव्य माना जाता था। आज अनेक लोग समयाभाव या सुविधा के कारण ऐसे अवसरों में भी उपस्थित नहीं हो पाते। इससे शोकग्रस्त परिवार स्वयं को अकेला महसूस करता है। विवाह, धार्मिक आयोजन, सामुदायिक सेवा और अन्य सामाजिक अवसर भी लोगों को जोड़ने का माध्यम थे, जिनमें भागीदारी घट रही है। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया ने भी संवेदनाओं की अभिव्यक्ति को त्वरित और सतही बना दिया है। वास्तविक मुलाकात की जगह इमोजी और छोटे संदेशों ने ले ली है। इससे भावनात्मक गहराई प्रभावित होती है।

इस समस्या का समाधान केवल आलोचना में नहीं बल्कि व्यवहार परिवर्तन में है। परिवार के साथ समय बिताना, बुजुर्गों का सम्मान करना, मित्रों का हाल पूछना, संकट में लोगों की सहायता करना तथा सामाजिक और सांस्कृतिक आयोजनों में सक्रिय भागीदारी करना आवश्यक है। बच्चों को बचपन से सहानुभूति, सहयोग और सामुदायिक जीवन के संस्कार दिए जाने चाहिए। विद्यालयों और सामाजिक संस्थाओं को भी सेवा, स्वैच्छिक कार्य और मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देना चाहिए।

अंततः संवेदनशीलता किसी भी सभ्य समाज की सबसे बड़ी पहचान है। आर्थिक विकास, आधुनिक जीवनशैली और तकनीकी प्रगति तभी सार्थक हैं जब उनके साथ मानवीय रिश्ते भी मजबूत बने रहें। यदि हम अपने आसपास के लोगों के लिए थोड़ा समय निकालें, उनकी खुशियों और दुखों में सहभागी बनें तथा सामुदायिक परंपराओं का सम्मान करें, तो समाज अधिक मानवीय, संतुलित और सशक्त बन सकता है। संवेदनशीलता का पुनर्जागरण ही स्वस्थ और समरस समाज की दिशा में सबसे महत्वपूर्ण कदम है।

व्यवसाय और उद्योग

- डॉ. अजय चौबे, भोपाल

सभी बंधुओं को पालगन....... पूर्व में आपको अपना व्यवसाय/उद्योग स्थापित करने के विभिन्न चरणों के बारे में विस्तार से बताया गया था, आशा है आप सभी उससे लाभान्वित हुए होंगे। आगे के अंकों में आपको उद्योगों के प्रोजेक्ट प्रोफाइल के बारे में जानकारी दी जाएगी जो कि समाज के उद्यमियों के लिए लाभदायक हैं और इनके द्वारा महिलाएं एव पुरुष सभी अपना व्यवसाय शुरू करने में लाभान्वित हो सकते हैं..... क्योंकि प्रोफाइल्स तकनीकी भाषा में होने के कारण अंग्रेजी में देना सुविधाजनक है ,ये प्रोफाइल सरल अंग्रजी भाषा में है जो की समाज के उद्यमी बंधु समझ सकते हैं।

POTATO FROZEN FRENCH FRIES

Introduction

Indian fast food sector is growing at 25–30 % annually due to rapid growth of fast food chain both Indian and international.

French fries are among the highest saleable potato products. This is the most abundant processed potato and can be found in many varieties

Capacity of Plant

The rated capacity of the Frozen French fries is 1920 MT per annum.

Project component and cost

Major components of the project and their costs are as described in the table hereunder

Particulars	Unit	Qty	Cost/unit	Total
LAND & BUILDING				**179.18**
Land	SqM	3,100	625.00	19.38
Land Development				
Land Area		3,100	1,500.00	46.50
Building				
Production Block				
Raw MaterialHall	SqM	200	5,000.00	10.00
Production Hall	SqM	300	5,000.00	15.00
Laboratory	SqM	40	5,000.00	2.00
Hygine/Ultra hygine area	SqM	50	5,000.00	2.50
Storage Block				
Finished Product	SqM	100	5,000.00	5.00
Cold Storage	SqM	1,200	5,000.00	60.00
UTILITY AREA & ADMIN BLOCK	SqM			
Utility area required for boiler,coal or fuel store etc.	SqM	40	5,000.00	2.00
Administrative block	SqM	100	6,500.00	6.50
Contingencies		10%		10.30
PLANT & MACHINERY				**588.46**
Automatic French Fry Production Line Model FRL	LS	1	509.49	509.49
Installation Costs	LS	5%		25.47
Contingencies		10%		53.50
MISCELLANEOUS FIXED ASSETS				**51.15**
Furniture and Fixture	LS	1	500,000	5.00
Computers & Other Electrical Items	No	6	50,000	3.00
Cars	No	1	500,000	5.00
Reefer Trucks	No	2	1,300,000	26.00
Weih Bridge	No	1	250,000	2.50
Others	LS	1	500,000	5.00
Contingencies		10%		4.65
PRE-OPERATIVE EXPENSES				**59.86**
Establishment		1	2,994,000	29.94
Particulars	**Unit**	**Qty**	**Cost/unit**	**Total**
Professional Charges		1	200,000	2.00
Interest During Construction		1	1,151,700	11.52
Security Deposits		1	1,640,000	16.40
TOTAL				**878.64**

Means of Finance

EQUITY CAPITAL			44.57%	410.68
CENTRAL SUBSIDY	25%	50.00	5.43%	50.00
TERM LOAN				
FINANANCIAL INSTITUTIONS		10.00%	50.00%	460.68
-Payable half yearly Installments	14	32.90		
TOTAL			100%	921.36

Projected profit and loss account

Particulars	Year 1	Year 3	Year 5	Year 7
INCOME	710.40	1,598.40	1,598.40	1,598.40
EXPENDITURE	598.34	1,264.53	1,268.95	1,269.71
VARIABLE	454.88	994.29	990.17	986.04
FIXED	143.46	270.24	278.79	283.67
GROSS PROFIT	112.06	333.87	329.45	328.69
PROFIT BEFORE TAX	(27.26)	186.84	195.58	207.99
RETAINED PROFIT	(27.26)	186.84	195.58	207.99

इच्छुक पाठक पूर्ण विवरण के लिए ई-मेल nikitachaturvedi17@gmail.com पर संपर्क करे।

देश का युवा अब जाग चुका है....

-शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी, फिरोजाबाद

बच्चे युवा अब सब जाग चुके हैं
अपने अधिकारों को पहचान चुके हैं।
संविधान ने क्या क्या अधिकार दिए हैं
उन अधिकारों को वे जान चुके हैं
शासन का अब डर भय खौफ नहीं है ।
शैक्षणिक अधिकारों के लिए लडना है
मूक बधिर होकर नहीं रहना है ।
संगठन में ही शक्ति होती है
संगठित हो अधिकार पा सकते है।
शिक्षा सबका अधिकार है,
शिरोधार्य करना सीखा रहे हैं।
नैतिक शिक्षा संस्कार को अब
तार तार होने से बचाएं रखना हैं ।
मिल जुल देश का विकास करना है
लोकतंत्र को जीवित रखना है
राजनीति से शिक्षा में अंतर ना आए
देश को जंतर-मंतर नहीं बनने देना है
बच्चे, युवा देश भावी भविष्य है,
लाठी चार्ज मौका नहीं देना है ।
गांधी वाद सिध्दांत पर चल कर
हमें अपनी सैध्दांतिक बात मनवा कर
अफसरशाही, भ्रष्टाचार जड़ से मिटाना है ।।

बारिश

- चित्रा चतुर्वेदी, भोपाल

देखो झमाझम बारिश आई
बाहर निकलो मेरे भाई
मोबाइल से नाता तोड़ो
नए खेल से सबको जोड़ो
एक नया खेल खेलते
गड्ढे पानी से भर जाते
उसमे हम सब जोर से कूदते
छपाक छई करके हंसते
कागज की एक नाव बनाते
उसको फिर नाली में चलाते
साथ साथ में हम सब दौड़ते
जोर जोर से गाते जाते
छपाक छई छपाक छई
बारिश जोर जोर से आई
बारिश में हमने सदा ये जाना
बचपन अपना कभी न खोना

स्वाइन फ्लू से बचाव एवं आयुर्वेदिक उपचार

-डॉ. मनोज चतुर्वेदी, लखनऊ

स्वाइन फ्लू सामान्यतः इन्फ्लुएंजा-ए (H1N1) वायरस से होने वाला श्वसन संक्रमण है। यह संक्रमित व्यक्ति के खांसने, छींकने या निकट संपर्क में आने से फैल सकता है। अधिकांश लोगों में यह सामान्य फ्लू की तरह ठीक हो जाता है, लेकिन बुजुर्गों, छोटे बच्चों, गर्भवती महिलाओं तथा पहले से हृदय, फेफड़े, मधुमेह जैसी बीमारियों वाले लोगों में गंभीर संक्रमण का खतरा अधिक हो सकता है। इसलिए बचाव, समय पर पहचान और उचित चिकित्सा अत्यंत आवश्यक है।

स्वाइन फ्लू के प्रमुख लक्षण : इसमें अचानक बुखार, ठंड लगना, खांसी, गले में खराश, नाक बहना या बंद होना, सिरदर्द, शरीर में दर्द और अत्यधिक थकान हो सकती है। कुछ लोगों को उल्टी या दस्त भी हो सकते हैं। सांस लेने में कठिनाई, सीने में दर्द, अत्यधिक कमजोरी, भ्रम या लगातार बिगड़ती स्थिति गंभीर बीमारी के संकेत हो सकते हैं।

स्वाइन फ्लू से बचाव के उपाय

1. हाथों की स्वच्छताः साबुन और पानी से बार-बार हाथ धोएं। बाहर से आने के बाद, भोजन करने से पहले और खांसने-छींकने के बाद हाथ साफ करना विशेष रूप से जरूरी है।
2. खांसते-छींकते समय सावधानीः मुंह और नाक को टिश्यू या कोहनी से ढकें। इस्तेमाल किया हुआ टिश्यू तुरंत बंद कूड़ेदान में डालें।
3. भीड़ और संक्रमित व्यक्ति से दूरीः फ्लू के प्रकोप के दौरान अनावश्यक भीड़ से बचें। संक्रमित व्यक्ति के बहुत निकट संपर्क से बचना संक्रमण की संभावना कम करता है।
4. मास्क का उपयोगः यदि स्वयं फ्लू जैसे लक्षण हों तो दूसरों से संपर्क कम करें और आवश्यकता होने पर उचित मास्क पहनें। अस्पताल या भीड़भाड़ वाले स्थानों में मास्क उपयोगी हो सकता है।
5. व्यक्तिगत वस्तुएं साझा न करेंः तौलिया, रूमाल, गिलास, बर्तन आदि साझा करने से बचें।
6. पर्याप्त नींद और संतुलित भोजनः पौष्टिक भोजन, पर्याप्त पानी और नियमित नींद शरीर की सामान्य प्रतिरोधक क्षमता को बनाए रखने में सहायक हैं।
7. फ्लू का टीकाः इन्फ्लुएंजा वैक्सीन गंभीर फ्लू से बचाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विशेषकर बुजुर्गों और उच्च जोखिम वाले व्यक्तियों को अपने चिकित्सक से वार्षिक फ्लू टीकाकरण के संबंध में सलाह लेनी चाहिए

आयुर्वेद की दृष्टि से देखभाल

आयुर्वेद में शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बनाए रखने के लिए दिनचर्या, उचित आहार, पर्याप्त विश्राम और पाचन शक्ति को संतुलित रखने पर जोर दिया जाता है। लेकिन यह समझना जरूरी है कि H1N1 एक वायरल संक्रमण है और आयुर्वेदिक उपायों को आधुनिक चिकित्सा का विकल्प नहीं माना जाना चाहिए।

हल्के लक्षणों में, चिकित्सकीय सलाह के साथ, निम्न सामान्य उपाय सहायक हो सकते हैं:

1. तुलसी-अदरक की हल्की चाय गले में खराश और सामान्य असहजता में आराम दे सकती है। इसे बहुत अधिक मात्रा में या अत्यधिक गर्म रूप में न लें।
2. हल्दी को पारंपरिक रूप से सूजनरोधी गुणों के लिए उपयोग किया जाता है। सामान्य भोजन में उचित मात्रा में हल्दी का सेवन किया जा सकता है। इसे H1N1 को खत्म करने वाली औषधि नहीं समझना चाहिए।
3. गुनगुने पानी से गरारे गले में खराश होने पर गुनगुने पानी से गरारे करने से अस्थायी राहत मिल सकती है। नमक की उचित मात्रा वाला गुनगुना पानी भी इस्तेमाल किया जा सकता है।
4. भापनाक बंद होने पर साधारण गर्म पानी की भाप कुछ लोगों को अस्थायी राहत दे सकती है। अत्यधिक गर्म भाप से जलने का खतरा रहता है, इसलिए सावधानी जरूरी है। बच्चों को विशेष रूप से बिना निगरानी भाप न दें।
5. पर्याप्त तरल पदार्थ बुखार या पसीना आने पर शरीर में पानी की कमी हो सकती है। पानी, सूप और अन्य उपयुक्त तरल पदार्थ पर्याप्त मात्रा में लेना उपयोगी है।

इसलिए बिना चिकित्सकीय सलाह के कई आयुर्वेदिक औषधियां एक साथ लेना उचित नहीं है।

विशेषकर बुजुर्ग व्यक्ति, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय या गुर्दे की बीमारी वाले व्यक्ति, अथवा पहले से कई दवाएं लेने वाले लोग किसी भी आयुर्वेदिक औषधि का सेवन शुरू करने से पहले योग्य आयुर्वेद चिकित्सक और अपने नियमित चिकित्सक से सलाह लें।

यदि तेज या लगातार बुखार, सांस लेने में परेशानी, सीने में दर्द, ऑक्सीजन की कमी, अत्यधिक कमजोरी, लगातार उल्टी, बेहोशी/भ्रम या लक्षणों का तेजी से बढ़ना दिखाई दे तो घरेलू या आयुर्वेदिक उपचार पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। तत्काल चिकित्सकीय जांच आवश्यक है।

शाखा समाचार

नोयडा

दिनाँक 2 अगस्त 2026 को दिल्ली एन सी आर श्री माथुर

चतुर्वेदी सभा महिला प्रकोष्ठ की ओर से हरियाली तीज महोत्सव नोयडा में मनाया गया। इस आयोजन का प्रबंधन अनुपमा जी,ज्योत्सना जी, इंदु जी एवं प्रीती जी ने किया। सभी बहनों ने बढ़ चढ़ कर सपरिवार हिस्सा लिया।सावन गीत–नृत्य, खेल और स्टॉल ने कार्यक्रम की रौनक बढ़ा दिया।आज की मुख्य अतिथि आदरणीय मृदुला जी थी। श्री माथुर महासभा के सम्माननीय संरक्षक श्री विष्णुकांत जी, श्री कमलेश पाण्डे जी, डॉ. प्रदीप जी व अन्य पदाधिकारी मुनीन्द्र जी, श्री ग्यानेन्द्र जी,एवं श्री भुवनेश जी (गोंदिया) भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

– **श्रीमती इंदु चतुर्वेदी**

***

लखनऊ

दिनाँक 27 जुलाई 26 को अचानक महासभा सभापति ऊषा

जी के लखनऊ आगमन की सूचना दिलीप जी से मिली, सोमवार की शाम को ही लखनऊ से महासभा कार्यकारिणी सदस्यों और लखनऊ मंडल के पदाधिकारियों के साथ एक बैठक होटल गंगा ग्रीन लखनऊ में संपन्न हुई। जिसमें लखनऊ मंडल के अध्यक्ष प्रदीप जी एवं हरदोई सभा के अध्यक्ष श्री पंकज जी ने सभापति को पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया। मीटिंग का संचालन चंद्रिका के संपादक दिलीप जी ने किया।इसके बाद ऊषा जी ने अपने संबोधन में महासभा की भविष्य की योजनाओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए महासभा की सदस्यता अभियान एवं संगठन का विस्तार करने पर गहन मंत्रणा की। उसके बाद सभापति ने विशेष सहायता निधि में एवं अन्नपूर्णा योजना में सभी से अधिक से अधिक योगदान का आग्रह किया। इसके बाद लोगों द्वारा विवाह विच्छेदन और परिवार विघटन का मुद्दा उठाने पर ऊषा जी ने इस समस्या पर व्यवहारिक समाधान करने की कोशिश पर विस्तृत उल्लेख किया। इस गंभीर चिंतन में मनीष जी, यदुवेश जी, दीपक जी, बबिता जी, सुचित्रा जी, तनुजा जी, विपिन जी,नवीन जी,ललित जी, पंकज जी, हर्ष जी, राजीव जी, नमन जी, दिवस जी, नवीन जी , प्रवेश जी, विनय जी एवं पियूष जी ने भी अपने अपने विचार प्रस्तुत किए। सौरभ जी ने मीटिंग को आयोजित करने की जिम्मेदारी पूर्ण तन्मयता से निभाई। सभा का समापन करते हुए प्रदीप जी ने महासभा की सभापति ऊषा जी को लखनऊ वासियों के लिए समय निकालने के लिए धन्यवाद देते हुए आभार व्यक्त किया। उन्होंने कम समय में उत्तम व्यवस्था एवं स्वादिष्ट जलपान हेतु पंकज जी और नमन जी को विशेष धन्यवाद दिया।

– **सौरभ चतुर्वेदी,** मंत्री

***

ग्लोबल शाखा

चतुर्वेदी महासभा की ग्लोबल शाखा की नियमित बैठकें मई, जून और जुलाई में ज़ूम के माध्यम से आयोजित हुईं। भारतीय विरासत और चतुर्वेदी परंपराओं पर युवा सदस्यों की परिचर्चा के परिणाम स्वरूप मई की बैठक में चारु, कार्तिक, श्रेया, शलभ, और सुरभि — इन पाँच युवाओं ने मिलकर एक अनूठी पहल

शुरू की- चतुर्वेदी शाखा की बैठक में अन्य गतिविधियों के साथ वेदों को पढ़ने की गतिविधि को शामिल किया गया। ये सभी युवा मेधावी इंजीनियर हैं और अपने-अपने कार्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल कर रहे हैं। इसके साथ साथ, अमेरिका में रहते हुए भी इन्होंने हिंदू शास्त्रों को पढ़ने और समझने का संकल्प लिया। इस संकल्प के पीछे यह भावना है कि वे अपने चतुर्वेदी उपनाम के योग्य बनें। समाज के अन्य सदस्यों - सैनफ्रांसिस्को से श्री अनिरुद्ध और श्रीमती देवयानी, ह्यूस्टन से श्रीमती नीलम, एल ए से श्रीमती ऋचा, सिडनी से श्री दीपक, सिडनी से श्रीमती शुभा और अटलांटा से श्री निशीथ और श्रीमती ज्योति ने इस पहल का स्वागत किया।

जून की बैठक में, चारु चतुर्वेदी ने हिंदू शास्त्रों पर एक प्रस्तुति दी, जिसमें उन्होंने श्रुति और स्मृति के बीच के अंतर को समझाया और वेदों तथा वेदांत की संरचना का संक्षिप्त परिचय दिया। इस चर्चा के बाद उपस्थित सदस्यों ने विचार-विमर्श किया कि साथ मिलकर कौन सा शास्त्र पढ़ा जाए, और अंततः ईशोपनिषद को चुना गया।

जुलाई की बैठक में ईशोपनिषद के प्रसिद्ध शांति मंत्र — ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदम पूर्णात पूर्णमुदच्यते — पर गहन चर्चा हुई। इस चर्चा में युवाओं ने अपने-अपने ज्ञान और दृष्टिकोण से योगदान दिया — गणित, अद्वैत वेदांत दर्शन, और आधुनिक जीवन के व्यावहारिक अनुभवों को मिलाकर बातचीत को एक गहरी और समृद्ध दिशा दी। मंत्र के संस्कृत शब्दों के अर्थ से लेकर पूर्णता और अनंतता की दार्शनिक अवधारणाओं तक, और रोज़मर्रा के जीवन में आध्यात्मिक शांति बनाए रखने की चुनौतियों तक — चर्चा ने कई आयामों को छुआ। समूह ने तय किया कि अगली बैठक में ईशोपनिषद के अगले मंत्र पर चर्चा जारी रखी जाएगी। यह पहल बहुत विशेष है क्योंकि यह युवाओं ने प्रारंभ की है — अपनी जड़ों और परंपरा से जुड़ने की स्वाभाविक जिज्ञासा से प्रेरित होकर, बिना किसी बाहरी दबाव के। युवा समूह की यह पहल सिर्फ धार्मिक शिक्षा पर केंद्रित नहीं है, बल्कि एक जीवंत सामुदायिक अनुभव बनाने का प्रयास है। इन आर आई चतुर्वेदी परिवार इस लिंक के माध्यम से ग्लोबल इन आर आई शाखा के सदस्य बन सकते हैं।

https://forms.gle/JEG2xPMck25fms6q8

- ज्योति चतुर्वेदी, अटलांटा यूएसए

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी माधुर्य और भक्ति

-अभय राज चतुर्वेदी, गुरुग्राम

यशोदा के आँगन में जब, अवतरित हुए घनश्याम,
मंद-मंद मुस्कान लिए, अधरों पर था मधुरतम नाम।

मुरली की तान में गूँज उठा, वृंदावन का पावन वन,
राधा के अनुराग से महका, प्रेम-सुधा से सारा मन।

धर्म-संस्थापन हेतु प्रभु ने, गीता का अमर संदेश दिया,
कर्म, सत्य और करुणा का, मानव को दिव्य उपदेश दिया।

हे नंदलाल! तुम्हारी कृपा से, मिट जाए मन का अंधकार,
हर हृदय में प्रेम प्रज्वलित हो, हर जीवन हो सुखमय साकार।

जन्माष्टमी के शुभ पर्व पर, नमन तुम्हें बारंबार—
जय श्रीकृष्ण! जय मुरलीधर! जय जग के पालनहार!

श्री गणेश वंदना

-शिविका चतुर्वेदी, जयपुर

पहली पूजा है तुम्हारी,
सबसे प्यारी सूरत तुम्हारी,
मोदक हाथ, मूषक साथ,
हर राह आसान करते नाथ।

सिंदूर तिलक, गज-सा रूप,
तुमसे ही रोशन है सारी धूप,
जहाँ-जहाँ पड़े चरण तुम्हारे,
खुशियों के दीप जलें सारे।

विघ्न हरो, मंगल करो,
भक्तों के मन में उजियारा भरो,
बुद्धि दो, सिद्धि दो, सुख अपार,
तुम बिन अधूरा है सब संसार।

जय गणेश, जय गणेश, देवा,
सब करें दिन-रात तेरी सेवा,
तेरे नाम से ही होता हर काज विशेष,
तू है सबका भाग्य, तू ही है गणेश।

समाज समाचार

- चि. उदयन पुत्र अम्बर पाण्डेय (मैनपुरी/ भोपाल) को B.Tech की डिग्री प्राप्त करने और KPMG, बेंगलुरु में एडवाइजरी-कंसल्टिंग में AI Engineer के तौर पर जीवन के प्रथम प्रोफेशनल करियर शुरू करने के अवसर पर महासभा की अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ रुपये 5100/- प्रदान किये। बधाई। (र.क्र.-2026113)
- **मेरी दो नवीन कृतियाँ** : वर विवाह संस्कार एवं गीत एवं कन्या विवाह संस्कार एवं गीत — समाज को सादर समर्पित हैं। आज के बदलते सामाजिक परिवेश में ये पुस्तकें कितनी सार्थक और उपयोगी सिद्ध होंगी, इसका निर्णय तो समय और समाज ही करेगा किन्तु मुझे पूर्ण विश्वास है कि ये कृतियाँ भारतीय पारिवारिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं के संरक्षण, संस्कारों के संवर्धन तथा विवाह जैसे पावन संस्कार की गरिमा को अक्षुण्ण बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँगी। इन दोनों पुस्तकों का सृजन गत दो वर्षों की सतत साधना, अध्ययन और लेखन का परिणाम है। इस सृजन-यात्रा में मेरी बड़ी बहन स्व. श्रीमती किरण चतुर्वेदी की प्रेरणा एवं मेरी पुत्री डॉ. प्रकृति चतुर्वेदी, भोपाल के निरन्तर उत्साहवर्धन और सहयोग ने मुझे सदैव संबल प्रदान किया। उन दोनों के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ। इसमें प्रत्येक किताब हेतु सहयोग राशि 175/- रुपये है। कोरियर शुल्क अलग से होगा। डॉ. बीना चतुर्वेदी, जयपुर-9929288184।

कन्हैया फिर से आ जाओ

– **चित्रा चतुर्वेदी,** भोपाल

दमन करने तुम कंसों का
कन्हैया फिर से आ जाओ
जन्म इस धरती पे लेकर
प्रेम रस सब पे बरसाओ
दमन......

यशोमति मैया का कान्हा
है गोकुल का यही गहना
है इसके सब ही दीवाने
हमें भी दर्शन दे जाओ
दमन......

सुदामा कृष्ण की जोड़ी
युगों से मुख पे तोआती
इतनी गहरी मैत्री का
हमें भी राज बतलाओ
दमन ....

मैत्री की राह दिखलाने
रण की आपदा से बचने
सभी को पार लगवाने
आशुतोष फिर से आजाओ
दमन......

महाभारत के रण में भी
अर्जुन को धर्म सिखलाया
गीता के ज्ञान को समझे
मुरलीधर अलख जगा जाओ
दमन करने..

केशव कुंज बिहारी रे
माधव कृष्ण मुरारी रे
भँवर में भटकी नैय्या को
अब तो पार लगा जाओ
दमन..

रेशम की डोरी

– **चित्रा चतुर्वेदी,** भोपाल

भाई बहन का प्रेम है राखी
सब के दिल में अलख जगाती

रेशम की डोरी प्यार की निशानी
बहना ने पहनायी जग ने है मानी

दुनिया कितने रंग है बदले
भाई बहन का प्यार ना बदले

बहना हरदम याद है करती
राखी पर भैया आ जाये

उपहारों की ना हो बरसात
माँ पापा हों उसके साथ

सीमा पर है अपने भाई
उन्होंने देश की शान बढ़ाई

बहना को तो दे दो भाई
ना रहे सूनी इनकी कलाई
ना बिछड़े बहन और भाई
हर बहना की यही कमाई

बिछड़े स्वजन

* सुरेन्द्र चतुर्वेदी (पप्पू) पुत्र स्व. राम चन्द्र जी – स्व. विमला देवी चतुर्वेदी (होलीपुरा– चचा कम्पनी/राँची) का निधन आज दिनाँक 25 जुलाई 2026 को रांची में लगभग 58 वर्ष की उम्र में हो गया।

* श्री पंडित चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री लक्ष्मण प्रसाद जी चतुर्वेदी का आकस्मिक निधन आज दिनांक 26 जुलाई, 2026 को हो गया।

* श्री पराग चतुर्वेदी पुत्र श्री भूपेंद्र नाथ चतुर्वेदी, पूर्व अध्यक्ष, मैनपुरी सभा (मैनपुरी/गाजियाबाद) का स्वर्गवास दिनाँक 29 जुलाई 2026 को हो गया।

* श्री पद्माकर चतुर्वेदी (होलीपुरा/आगरा) का स्वर्गवास दिनाँक 02 अगस्त 2026 को हो गया। आप संजीव चतुर्वेदी @ संजू बाबा के पिता थे।

* श्री सुनील चतुर्वेदी पुत्र स्व. किशन प्रसाद चतुर्वेदी (करहल/कानपुर) का देहावसान दिनाँक 03 अगस्त 2026 को हो गया।

* श्री लोकेश जी पुत्र स्व. कलाधर प्रसाद जी (मैनपुरी/वाराणसी) का देहावसान दिनाँक 05 अगस्त 2026 को हो गया।

* श्रीमती आशा चतुर्वेदी पत्नी श्री मृगेंद्र नाथ चतुर्वेदी (कमतरी/वर्धा) का देहावसान 78 की आयु में दिनाँक 03 अगस्त को दिल्ली में अपनी बेटी के पास हृदय गति रुक जाने से हो गया।

* श्री जितेन्द्र कुमार चतुर्वेदी @अनिल पुत्र स्व.नरेन्द्र कुमार चतुर्वेदी (कमतरी/प्रयागराज) का निधन दिनाँक 8 अगस्त 2026 को हो गया।

* श्री कैलाश चंद्र चतुर्वेदी (हिंडौन/कानपुर/बैंगलौर) का दिनाँक 11 अगस्त 2026 को अपने छोटे पुत्र के निवास बंगलौर में दुखद देहांत हो गया।

* कु. विनीता चतुर्वेदी पुत्री स्व. हेतराम चतुर्वेदी (चंद्रपुर/मथुरा) का लगभग 79 वर्ष की आयु में आज 13 अगस्त 2026 को मथुरा में देहावसान हो गया।

* श्री सुरेश चंद जी चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री छक्कन लाल चतुर्वेदी (बिजकौली/दिल्ली/जयपुर) का 85 वर्ष की आयु में दिनाँक 14 अगस्त 2026 को जयपुर में स्वर्गवास हो गया।

* श्री गोविंद चतुर्वेदी (चन्द्रपुर/ भोपाल) का देहावसान दिनाँक 15 अगस्त 2026 को भोपाल में हो गया।

* श्री विवेक वल्लभ जी सुपुत्र स्व. राधा वल्लभ जी (मलयपुर/वाराणसी) का देहावसान 16 अगस्त 2026 को अपनी बेटी के पास नोयडा में हो गया।

* श्रीमती कामिनी चतुर्वेदी पत्नी श्री मेघराज चतुर्वेदी (चंद्रपुर/दिल्ली) का स्वर्गवास अर्द्ध रात्रि को दिनाँक 12 अगस्त 2026 को अपने निज निवास पर छत्तरपुर, दिल्ली में हो गया।

* श्रीमती बिट्टो देवी चतुर्वेदी (तरसोखर/आगरा) का स्वर्गवास दिनाँक 19 अगस्त 2026 को आगरा में निधन हो गया।

* श्रीमती माधुरी चतुर्वेदी पत्नी स्व. गिरीश चतुर्वेदी (आगरा/पुरा) उम्र लगभग 62 वर्ष का देहावसान 24/08/2026 को आगरा में छोटे बेटे के पास हो गया है।

* श्री बसंत चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्रीधर चतुर्वेदी (तरसोखर) का स्वर्गवास दिनांक 23/8/26 को 48 वर्ष की आयु में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

हरतालिका तीज का अर्ग

बेल बिजोरो नारियरो वे देती गोरन देव अर्ग
(गोरा के स्थान पर अरग देने वाली महिला का नाम)
अर्ग दई वर मॉंग लियो महादेव जासु भरतार
(महादेव के स्थान पर अब देने वाली महिला के पति का नाम)
दें मेरी गौरारानी सोजु बरो जो तारे सब तारे सब परिवार
दे मेरी गौरा रानी औढो दे अहिवात।
दुर हर दुर हुर मै भयो गौरन दे बैठी न्हाय।
माथे केवरो रानी सिर गूंथे सुहागिल जबाब न देई।
एड़ियाँ महावर रंग रंगो जिनके सिरह कुसूमिल घाट हाथ मेहँदुली रंग राचनी उनको गोद जरूलो पूत।
महादेव राव बढ़े वे नित बढ़े उनके धन बहुतेरो माल घनेरो होय।
गौरन दे की पाटियाँ जिन ऊदो सो सिन्दुरा जिन मैलो होय गौरा रानी माँगो एक बरदान।
हारो नियरो दुःख दारिद्री पर बुद्धियरो परचित्तियरों।
गौरा सो मत देऊ भरतार।
नीले से हाँसुला राजा वे चढ़ैं सब पंचन में प्रधान
हाँसिए चिन्तिऐ कैसे हँसुला टपकियो मैं मागरे माछरे सूती डाग डगोरा है।
लख तोरा हैं पाती ये शंकर सिरे चढ़ाइयों।
मैं माघ मास के न्हायें माधो पाइयो।
जो न्हायें फल होय सो मन इच्छियो।
हाथ कलाई कंगन चूनर ओढ़ना।
हाय हियेसो हार पाइ दश आँगुरी।
जाह जूही को फूल समल को पनियाँ।
महादेव (पति का नाम) से भरतार गौरन दे रानियाँ (देने वाली का नाम सात अंगुल पानी वे राजा वे रानी।

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' सितम्बर 2026

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak2024.chandrika@gmail.com

(र.क्र. 2026114)